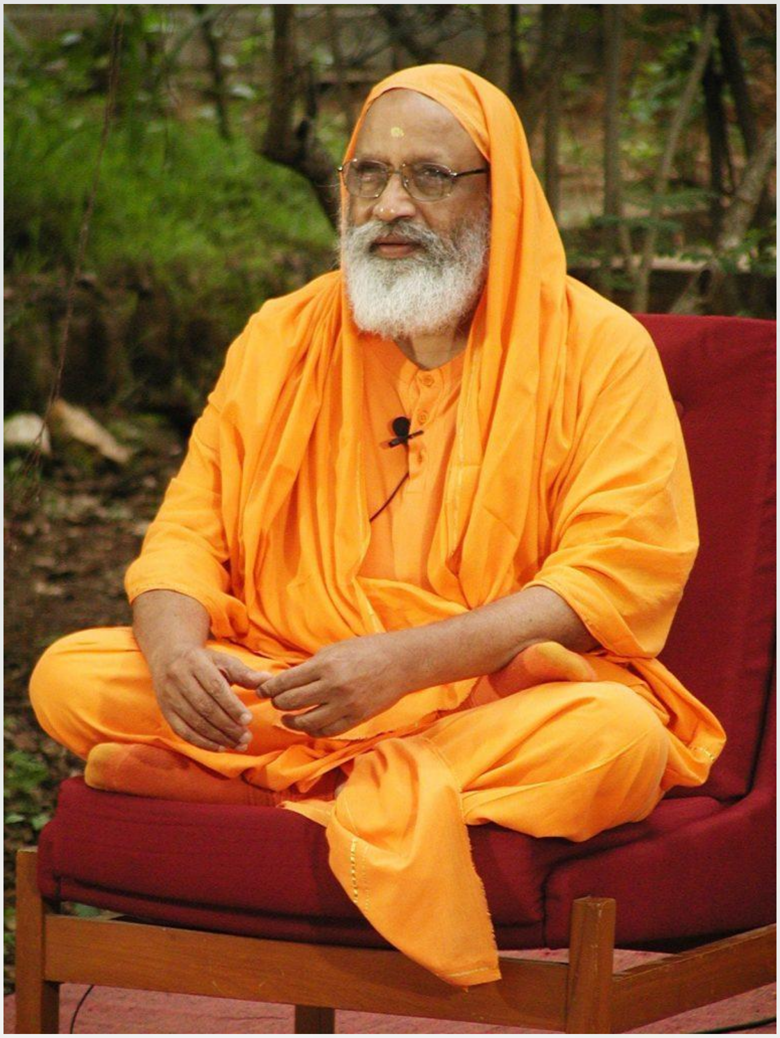
ISBN: 978-93-5692-442-0

स्वामी दयानंद सरस्वती का शैक्षिक योगदान



- डॉ० राजीव अग्रवाल
- रजत त्रिपाठी
- निशा

स्वामी दयानंद सरस्वती का शैक्षिक योगदान

डॉ० राजीव अग्रवाल

प्रोफेसर- शिक्षा संकाय

अतर्रा पी० जी० कॉलेज, अतर्रा (बाँदा)

रजत त्रिपाठी

बी०एस-सी०, PG Diploma in Yogic Science, एम०एड०

निशा

एम०एस-सी० (रसायन विज्ञान), बी० एड०

स्वामी दयानंद सरस्वती का शैक्षिक योगदान

डॉ० राजीव अग्रवाल

रजत त्रिपाठी

निशा

E-book संस्करण: 2026

मूल्य: ₹ 50

ISBN: 978-93-5692-442-0

प्रकाशक-
निशा
ग्राम एवं पोस्ट- ब्रह्म नगर, अतर्रा, जिला- बांदा (उत्तर प्रदेश)- 210201
Mob-8423919810

E-mail: mishamisha98691@gmail.com

प्राक्कथन

ऋषियों-महर्षियों की परम पवित्र तपस्थली भारत भूमि पर सदैव सन्त महात्माओं, महायोगियों, धर्माचार्यो, महापुरुषों का अवतरण होता रहा है। यहाँ धर्म पर आधारित शिक्षा भारतीय जीवन का आवश्यक अंग एवं संस्कृति की आधार शिला रही है। धार्मिक शिक्षा से लोगों में अच्छे संस्कार उत्पन्न होते रहे हैं और संस्कृति हमारी चेतना को परिष्कृत करती रही है। इससे हमारे आचार-विचार व व्यवहार भी परिष्कृत होते रहे हैं।

प्राचीन धार्मिक शिक्षा में धर्माचरणों, संस्कारों, सामाजिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय चरित्र, पारस्परिक संवेदनाओं एवं स्थापित नैतिक आदशों के लिए भी पर्याप्त स्थान रहा है। उसके महत्व को इस रूप में माना गया है कि उसका उद्देश्य तत्कालीन समाज एवं परिस्थितियों में चरित्र-निर्माण, धार्मिक उद्देश्यों की पूर्ति, सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण एवं संवर्धन व्यावहारिक व सामाजिक जीवन के उद्देश्यों की पूर्ति एवं भावी पीढ़ी के नव-निर्माण में निहित रहा है। हमारे महापुरुषों की प्रेरणा से भारतीय संस्कृति के मूल संस्कारों से सम्पन्न ब्रह्मचर्यत्रती विद्यार्थियों ने महामानव होने की प्रतिष्ठा प्राप्त की और अपने ज्ञान ज्योत्ति से विश्व को अलोकित किया। ऐसे ही एक महापुरुष तमिलनाडु के जिले के गाँव में जन्मे नटराजन, जो बाद में स्वामी दयानन्द सरस्वती के नाम से प्रसिद्ध हुए थे, जिन्होंने वेदान्त, अर्श विद्या एवं AIM For Seva द्वारा सम्पूर्ण विश्व को अनुप्राणित किया।

वास्तव में शिक्षा ज्ञान के प्रचार-प्रसार का एक माध्यम है और इसका उद्देश्य एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक जीवन के सभी मूल्यों को पहुँचाने तथा भावी पीढ़ी को आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करना है।

प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक **"स्वामी दयानन्द सरस्वती का शैक्षिक योगदान"** है। इस पुस्तक को छः अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय में अध्ययन की पृष्ठभूमि, भारत में शिक्षा का विकास एवं समस्याएँ, शिक्षा के क्षेत्र में स्वयंसेवी संस्थाओं का योगदान, प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या, अध्ययन के उद्देश्य, परिसीमांकन एवं शोध विधि पर प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय में शोध समस्या से सम्बंधित कतिपय शोध अध्ययनों का वर्णन किया गया है।

तृतीय अध्याय में स्वामी जी की जीवन यात्रा, व्यक्तित्व एवम् कृतित्व के बारे में वर्णन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में स्वामी जी द्वारा स्थापित शैक्षिक संस्थानों का विवरण है।

पञ्चम अध्याय में स्वामी जी के शैक्षिक योगदान का विवरण है।

षष्ठ अध्याय में शोध के निष्कर्ष, अध्ययन के सुझाव, भावी शोध हेतु सुझावों के विषय में वर्णन किया गया है। प्रस्तुत पुस्तक प्रबन्ध पर आधारित है। शोध कार्य के प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान भण्डार में वृद्धि होती है एवं नवीन अनुसन्धानों को प्रेरणा मिलती है। किसी भी शोध कार्य का तब तक कोई अर्थ नहीं है जब तक कि वह जनसामान्य के लिए सुलभ न हो। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पुस्तक विद्यालय से सम्बन्धित विभिन्न घटकों में प्रेरणा का संचार करने में निश्चय ही सहायक सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के सृजन में सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लेखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है। हम सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियाँ होना स्वभाविक है। अतः यदि अनुभवी विद्वतगण अवगत कराने का कष्ट करेंगे तो हम अत्यन्त आभारी होंगे तथा भावी संस्करण में संशोधन का प्रयास करेंगे।

दिनांक: 27/02/2026 — डॉ० राजीव अग्रवाल

स्थानः अतर्रा — रजत त्रिपाठी

निशा

अनुक्रमणिका

अध्याय प्रथम

अध्ययन परिचय

1.1 प्रस्तावना

1.2 शिक्षा की समस्याएँ

1.3 समाज सुधारकों के शैक्षिक प्रयास

1.4 समस्या का प्रादुर्भाव

1.5 समस्या कथन

1.6 अध्ययन समस्या का औचित्य

1.7 समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या

1.8 अध्ययन के उद्देश्य

1.9 अध्ययन का परिसीमांकन

1.10 अध्ययन विधि

1.11 अध्ययन का महत्त्व एवम् सार्थकता

प्रथम अध्याय

अध्ययन परिचय

1.1 प्रस्तावना

भारत एक ऐसा देश है जो धर्म एवम् अध्यात्म के क्षेत्र में विश्व का मार्गदर्शन करता रहा है। हमारी प्राचीन सभ्यता एवम् संस्कृति तथा आदर्शों एवम् परम्पराओं का ही प्रभाव था कि संपूर्ण विश्व में हमारी सभ्यता एवम् संस्कृति का प्रसार हुआ। यहां यह स्वभाविक है कि ऐसी उत्कृष्ट संस्कृति व्यवस्था स्थापित करना और आदर्शों एवम् परम्पराओं को निर्धारित करना कैसे संभव हो सका तो इस प्रश्न का उत्तर है। अद्वितीय शिक्षा व्यवस्था उत्कृष्ट शिक्षा व्यवस्था के द्वारा भावी पीढ़ी का उच्च आदर्शों आकांक्षाओ विश्वासों तथा परम्पराओं और सांस्कृतिक सम्पति को इस प्रकार हस्तांतरित करता है कि व्यक्ति के हृदय में सद्भाव तथा त्याग की भावना प्रज्ज्वलित हो जाती है।

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। शिक्षा वह प्रकाश है जिसके द्वारा मनुष्य की समस्त जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान एवम् कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और उसे सभ्य एवम् सुसंस्कृत बनाया जाता है। शिक्षा, समाज एक पीढ़ी द्वारा अपने से निचली पीढ़ी को अपने ज्ञान के हस्तांतरण का प्रयास है। इस विचार से शिक्षा एक संस्था के रूप में काम करती है जो व्यक्ति विशेष को समाज से जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा समाज की संस्कृति की निरंतरता को बनाए रखती है। बच्चा शिक्षा द्वारा समाज के आधारभूत नियमों व्यवस्थाओं समाज के प्रतिमानों एवम् मूल्यों को सीखता है। बच्चा समाज से तभी जुड़ पाता है जब वह उस समाज विशेष के इतिहास से अभिमुख होता है।

शिक्षा व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमता तथा उसके व्यक्तित्व को विकसित करने वाली प्रक्रिया है। यही प्रक्रिया उसे समाज में एक वयस्क की भूमिका निभाने के लिए समाजीकृत करती है तथा समाज के सदस्य एवम् एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए व्यक्ति को आवश्यक ज्ञान तथा कौशल उपलब्ध कराती है। जब हम शिक्षा शब्द के प्रयोग को देखते हैं तो मोटे तौर पर यह दो रूपों में प्रयोग में लाया जाता है व्यापक रूप में तथा संकुचित रूप में व्यापक अर्थ में शिक्षा किसी समाज में सदैव चलने वाली सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान एवम् कौशल में वृद्धि एवम् व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और इस प्रकार उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवम् योग्य नागरिक बनाया जाता है। मनुष्य क्षण प्रतिक्षण नए-नए अनुभव प्राप्त करता है व करवाता है जिससे उसका दिन-प्रतिदिन का व्यवहार प्रभावित होता है। उसका यह सीखना-सिखाना विभिन्न समूहों, उत्सवों, पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो, टेलीविजन आदि से अनौपचारिक रूप से होता है। यही सीखना-सिखाना शिक्षा के व्यापक तथा विस्तृत रूप में आते हैं। संकुचित अर्थ में शिक्षा किसी समाज में एक निश्चित समय तथा निश्चित स्थानों (विद्यालय, महाविद्यालय) में सुनियोजित ढंग से चलने वाली एक सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा विद्यार्थी निश्चित पाठ्यक्रम को पढ़कर सम्बन्धित परीक्षाओं को उत्तीर्ण करना सीखता है। समाजशास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों व नीतिकारों ने शिक्षा के सम्बन्ध में अपने विचार दिए हैं—

- शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वांगीण एवम् सर्वोत्कृष्ट विकास से है।—महात्मा गांधी। (शिक्षा अनुसन्धान एवम् विकास सन्गठन, 2020-21)
- मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।—स्वामी विवेकानन्द। (शिक्षा अनुसन्धान एवम् विकास सन्गठन, 2020-21)
- शिक्षा व्यक्ति की उन सभी भीतरी शक्तियों का विकास है जिससे वह अपने वातावरण पर नियंत्रण रखकर अपने उत्तरदायित्त्वों का निर्वाह कर सके।—जॉन ड्यूवी (शिक्षा अनुसन्धान एवम् विकास सन्गठन, 2020-21)

आज की शिक्षा को केवल ज्ञान देने का साधन माना जा रहा है परन्तु शिक्षा जब तक जीवन के मूल्यों आदर्शों एवम् मान्यताओं का परिचय नहीं देती तब तक वह शिक्षा नहीं कही जा सकती। आज भारत में फैली सामाजिक बुराइयों यथा नैतिकता एवम् मूल्यों का ह्रास, अनुशासनहीनता आदि का हल हमारी व्यवस्था में सुधार लाकर ही किया जा सकता है। इसके लिए शिक्षा प्रणाली में बदलाव लाना होगा। यह भारतीय विद्वानों और शिक्षाविदों एवम् प्राचीन साहित्यों में वर्णित शैक्षिक विचारों तथा कुछ धर्मगुरूओं एवम् समाज सुधारकों द्वारा किए गए शैक्षिक प्रयासों का अध्ययन कर उसके आधार पर एक नई शिक्षा प्रणाली स्थापित करने पर ही सम्भव है।

1.2 शिक्षा की समस्याएँ

शिक्षा मानव को एक अच्छा इंसान बनाती है। शिक्षा में ज्ञान, उचित आचरण, तकनीकी दक्षता, शिक्षण और विद्या प्राप्ति आदि समाविष्ट है। इस प्रकार शिक्षा कौशलों, व्यवसायों, मानसिक, नैतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक क्षेत्रों के उत्कर्ष पर केन्द्रित है। भारतीय शिक्षा कई पद्धतियों से होकर गुजरी है। तरह-तरह की शिक्षा प्रणालियाँ स्थापित हुई जिसमें विकास भी हुआ लेकिन कई समस्याएं भी उत्पन्न हुई।



शिक्षा के क्षेत्र से जुड़ी ये विभिन्न समस्याएँ काफी गम्भीर रूप ले रही थीं। इन समस्याओं से निटपने के लिए कई शिक्षा नीतियाँ बनाई गई, कई प्रस्ताव पारित हुए। स्वतन्त्रता के पूर्व तथा स्वतन्त्रता के बाद विभिन्न समितियों एवम् आयोगों द्वारा सुझाव दिये गए एवम् शिक्षा के क्षेत्र में नए-नए प्रयास किये गए जिससे शिक्षा से जुड़ी विभिन्न समस्याओं का समाधान निकाला गया। धार्मिक, आध्यात्मिक, नैतिक शिक्षा की तरफ ध्यान कम दिया गया। प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च्च शिक्षा को बढ़ावा मिला, व्यावसायिक शिक्षा के लिए शिक्षा प्रस्ताव दिये गये परन्तु नैतिकता, धार्मिक तथा आध्यात्मिकता पर अधिक विचार नहीं किये गये। आधुनिक शिक्षा प्रणाली की प्रमुख समस्याएं निम्नलिखित हैं—

- **सूचना के तन्त्र के अधिकार:** शिक्षा प्रणाली में सूचना के तन्त्र के अधिकारों की कमी होती है। यह स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर अधिकतर छात्रों को उचित सूचना नहीं प्रदान करता है।
- **छात्रों में दबाव:** आधुनिक शिक्षा प्रणाली में छात्रों में बहुत अधिक दबाव होता है। इसके कारण छात्रों के मन में तनाव रहता है।
- **शारीरिक शिक्षा की कमी:** अधिकतर शिक्षा प्रणाली शारीरिक शिक्षा की उपेक्षा करती है।

- **शिक्षा के स्तर में असमंजस:** आधुनिक शिक्षा प्रणाली में अधिकतर लोग शिक्षा पाने के लिए स्कूल या कॉलेज में दाखिल होते हैं। इस प्रक्रिया में उनकी सामग्री, पढ़ाई की विधि और मूल्यों की प्रतिस्पर्धा इसकी गुणवत्ता पर असर डालती है। इस समस्या का हल उनकी अधिकतम सम्भावनाओं और क्षमताओं को समझकर उन्हें उनके रुचि के अनुसार पढ़ाने और उन्हें समझने के लिए नए-नए तरीकों की विकसित करने में हो सकता है।
- **विद्यार्थियों की संख्या की वृद्धि:** आधुनिक शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि हो रही है। यह समस्या शिक्षण संस्थाओं द्वारा इंफ्रास्ट्रक्चर की अधिकतम उपयोग करने और उनकी क्षमताओं को अधिकतम संभावनाओं के साथ बढ़ाने से हल हो सकती है। इस समस्या का एक अन्य समाधान दूरदराज के शिक्षण संस्थानों और नए-नए शिक्षण प्रणालियों को विकसित करने में हो सकता है ताकि अधिक संख्या में छात्रों के लिए स्थान हो सके।
- **पाठ्यक्रम की असंगठितता:** आधुनिक शिक्षा प्रणाली में एक और समस्या है कि विभिन्न राज्यों और क्षेत्रों में पाठ्यक्रमों में असंगठितता होती है। अलग-अलग राज्यों में यहां तक कि एक ही राज्य के भिन्न-भिन्न जिलों में भी पाठ्यक्रम भिन्न-भिन्न होते हैं। इससे छात्रों को समान शिक्षा का अधिकार नहीं मिलता है और उनकी तैयारी में भी दोष होते है।
- **भाषा की समस्या:** अधिकांश देशों में अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग भाषा बोली जाती है। इसलिए विद्यार्थियों के लिए अंग्रेजी के अतिरिक्त भाषा में शिक्षा उपलब्ध होना चाहिए। हालांकि, यह एक महत्वपूर्ण समस्या है जिसे सुलझाना आसान नहीं है।
- **शिक्षकों की कमी:** शिक्षा प्रणाली में एक अन्य समस्या है कि शिक्षकों की कमी होती है। इससे विद्यार्थियों के शिक्षण में देरी होती है और इससे उन्हें नुकसान होता है।
- **समय की कमी:** अधिकांश विद्यार्थी आधुनिक शिक्षा प्रणाली के तहत एक ही समय में अनेक गतिविधियों में भाग लेते हैं, जो समय की कमी और संघर्षों की भूमिका के लिए बनता है।
- **डिजिटल संतुलन की कमी:** अनुभवी शिक्षकों की अनुभवहीनता एवम् डिजिटल संतुलन की कमी आधुनिक शिक्षा प्रणाली में समस्याएं बनाती है। शिक्षकों को उन्नत प्रदर्शन और विद्यार्थियों को उत्तम संरचना प्रदान करने के लिए अधिक डिजिटल उपकरणों का उपयोग करना चाहिए।
- **शिक्षा का व्यवसायीकरण**

आधुनिक शिक्षा पद्धति की अपनी अलग ही विशेषता है पर दुर्भाग्य है कि यह जीवन में आर्थिक निर्भरता प्रदान करने तक ही सिमट कर रह गई है। सामाजिक समृद्धि एवम् प्रतिष्ठा का इसमें समावेश तो है पर इसका उपयोग कैसे किया जाये इसकी अनभिज्ञता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में समग्रता का पूर्णतया अभाव है। हम शिक्षा ग्रहण कर समग्र एवम् सुदृढ सोच का निर्माण करते हैं जिससे जीवन का समग्र विकास हो पर यह तभी सम्भव है जब हमें इसकी सही एवम् स्पष्ट जानकारी हो।

पुराने समय में शिक्षा ज्ञानदान की पुण्य परम्परा थी जो कि आज महज पैसा एकत्र करने की योजना बन कर रह गई। है। पहले योग्य आचार्य जो अपने अन्दर ज्ञान की अनन्त भण्डार संग्रहित किये रहते थे वे विद्यार्थियों को समुचित शिक्षा प्रदान कर उनका मार्ग आलोकित करते थे तब शिक्षा निःस्वार्थ सेवा थी जो सर्वजन हिताय को दर्शाती थी यही कारण था कि उन दिनों योग्य छात्रों की अधिकता थी या यूँ कहें तो जमावड़ा रहता था। यही विद्यार्थी आने वाले समय में अपने राष्ट्र एवम् समाज को अपने मजबूत कंधों का सहारा देते थे, यही था हमारे स्वर्णिम भारत का रहस्य। पहले जहाँ शिक्षा उपहार स्वरूप थी आज वहाँ सिर्फ और सिर्फ व्यवसाय का स्रोत है। आज एक से बढ़कर एक शैक्षणिक प्रतिष्ठान नित जन्म ले रहे हैं जहाँ सिर्फ धनाढ्य वर्ग ही शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। वहाँ छात्रों की योग्यता का विशेष मतलब नहीं होता है, मतलब तो बस उसकी पारिवारिक

सम्पन्नता से होता है। सम्पन्नता एवम् व्यावसायिकता की इस अंधी दौड़ में शिक्षा रूपी व्यवसाय तो जरूर फल-फूल रहा है, पर शिक्षा का मूल उद्देश्य खत्म हो गया। इन संस्थाओं में नैतिक मूल्य, धर्म, चरित्र एवम् व्यवहार का कोई मूल्य नहीं रह गया है।

- **मूल्यपरक शिक्षा का अभाव**

नैतिक शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति अपना जीवन एवम् समाज को उन्नति की तरफ अग्रसर कर सकता है। भौतिक शिक्षा के साथ-साथ नैतिक शिक्षा की भी आवश्यकता होती है। कोई भी व्यक्ति अच्छा या बुरा उसके अंदर के गुणों से बनता है। आज की शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा विलुप्त हो गई है। नैतिकता के ह्रास से सामाजिक बुराइयाँ उत्पन्न होने लगी हैं। धर्म और नैतिकता चिरकाल से भारतीयों की सांस्कृतिक विरासत के अङ्ग रहे हैं। नैतिकता के अभाव में हमारी सभ्यता एवम् संस्कृति पर बुरा असर पड़ रहा है। यदि हम अपनी सभ्यता को सुरक्षित और विकसित करना चाहते हैं, तो प्रत्येक शिक्षण-संस्थान में धार्मिक और नैतिक शिक्षा का उपयुक्त समावेश किया जाना आवश्यक है। नैतिक मूल्यों का विकास धार्मिक विश्वासों से होता है। व्यक्ति की नैतिक प्रगति, उसके धार्मिक दृष्टिकोण पर निर्भर करती है इसलिये शिक्षा धर्म से जुड़ी होनी चाहिए।

शिक्षा और धर्म में स्वाभाविक सम्बन्ध माना जाता है। आज की शिक्षा प्राचीन शिक्षा से पूर्णतया विपरीत पड़ती है। आज की मैकाले शिक्षा पद्धति से हमारी गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति कहीं अधिक उत्तम ही नहीं थी अपितु वह शिक्षा पद्धति एक प्रकार से सम्पूर्ण शिक्षा पद्धति थी। गुरूकुल शिक्षा पद्धति में सभी को समान स्नेह और समान सम्मान मिलता था। धर्म विहीन शिक्षा से नैतिकता का अभाव भी बढ़ गया है। विद्यार्थी निरंतर नैतिक पतन की ओर बढ़ रहा है अनुशासनहीनता भी बढ़ गई सामाजिक बुराइयाँ भी गति से आगे बढ़ रही हैं।

इससे स्पष्ट होता है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में धार्मिक मूल्यों में कितना महत्त्व है। समाधान हेतु कई शिक्षा आयोगों ने भी अपने प्रस्ताव एवम् सुझाव प्रस्तुत किये हैं—

- शिक्षा आयोग ने लिखा है "हम जिस बात पर बल देना चाहते हैं, वह यह है कि शिक्षा के सब स्तरों पर छात्रों में उचित मूल्यों के समावेश के प्रति ध्यान दिया जाना आवश्यक है?
- माध्यमिक शिक्षा आयोग ने लिखा है "चरित्र के विकास में धार्मिक और नैतिक शिक्षा महत्त्वपूर्ण योगदान देती है।"

1.3 समाज सुधारकों के शैक्षिक प्रयास

❖ महर्षि दयानन्द सरस्वती

महर्षि दयानन्द सरस्वती एवम् उनके अनुयायियों द्वारा स्थापित आर्य समाज ने साहित्यिक एवम् शैक्षणिक क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्य किये। महर्षि दयानन्द ने अपने ग्रंथ हिन्दी में लिखकर राष्ट्र-भाषा के विकास में योगदान दिया। महर्षि दयानंद संस्कृत के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए उसके अध्ययन और अध्यापन हेतु बल दिया। आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य अज्ञानता को दूर कर ज्ञान का प्रसार करना था, अतः उसने प्राचीन आश्रम व्यवस्था को पुनः स्थापित करते हुए उसके अध्ययन और अध्यापन हेतु बल दिया। उसने शिक्षा की प्राचीन गुरुकुल प्रणाली को प्रचलित किया, जहाँ विद्यार्थी



ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए गुरु के आश्रम में विद्या अध्ययन कर सकें। आर्य समाज ने ही मैकाले की माया से मुग्ध भारतीयों की मोह निद्रा को भंग किया। उस समय हिन्दुओं में नारी शिक्षा के विरुद्ध वातावरण व्याप्त था तथा स्त्रियों को पढ़ाना

समाज में अनुचित माना जाता था और वेदों को पढ़ना-पढ़ाना स्त्रियों के लिए वर्जित था। स्त्रियों में कठोर पर्दा प्रथा भी स्त्रियों की शिक्षा में बाधक थी।

❖ स्वामी विवेकानन्द

स्वामी जी सामाजिक परिवर्तन की गति को तीव्र कर भारत में व्यापक बदलाव लाना चाहते थे इसमे वे शरीर, मस्तिष्क और



आत्मा तीनों की भूमिका पर विचार करते थे, किन्तु उन्हें सबसे ज्यादा भरोसा 'आत्मा' पर ही था, जो उनकी क्रान्ति दृष्टि को दृढ़ भारतीय जमीन देती है। यह विश्व में अन्यत्र सम्भव नही है। स्वामी जी कहते हैं 'इसमे कोई शक नहीं कि शारीरिक शक्ति द्वारा अनेक महान कार्य सम्पन्न होते हैं और इसी प्रकार मस्तिष्क की अभिव्यक्ति भी अद्भुत है, जिससे विज्ञान के सहारे तरह-तरह के यन्त्रों तथा मशीनों का निर्माण होता है। स्वामी जी ने भारत में सम्पूर्ण परिवर्तन के लिए किसी एक वर्ण या समुदाय के परिवर्तन को पर्याप्त नहीं माना है। जब तक सभी इस दिशा में तत्पर नहीं रहेंगे तब तक यह बदलाव पूरा नही होगा। इसलिए वे सभी को विचारवान बनाना चाहते हैं वहीं आचरण की शुद्धता पर भी बल देते हैं।

❖ डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन



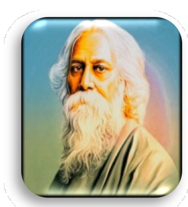
देश के द्वितीय राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने भारतीय शिक्षा जगत को नई दिशा दी। उनका जन्मदिन देश शिक्षक दिवस के रूप में मनाता है। वह निष्काम कर्मयोगी, करुणा हृदयी, धैर्यवान, विवेकशील और विनम्र थे। अनका आर्दश जीवन भारतीयों के लिए ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण मानवता के लिए प्रेरणास्त्रोत है। एक बार डॉ. राधाकृष्णन के जन्मदिन के शुभ अवसर पर उनके छात्रों एवम् दोस्तों ने उनसे जन्मदिन का जश्न मनाने की अनुमति मांगी लेकिन जवाब में उन्होने कहा कि मेरे जन्मदिन का जश्न मनाने के बजाय अगर 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस के रूप मे मनाया जाता है तो यह मेरे लिए सौभाग्य की बात होगी उनका मानना था कि समाज और देश की विभिन्न बुराइयों को शिक्षा के द्वारा ही सही तरीके से हल किया जा सकता है।

राधाकृष्णन जी ने शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हेतु कई प्रयास किए और शिक्षकों, छात्रों और शिक्षा पद्धति के बीच एक मजबूत सम्बन्ध विकसित किया। कुल मिलाकर उन्होने पूरी शिक्षा प्रणाली को ही बदल डाला। उनके अनुसार शिक्षकों को विद्यार्थियों का स्नेह और सम्मान प्राप्त करने के लिए आदेश नहीं देना चाहिए बल्कि उन्हें इसके योग्य बनाना चाहिए।

❖ रवीन्द्रनाथ टैगोर

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के समय में भारतीय शिक्षा का स्वरुप अपने पूर्वकालिक शिक्षा के सदृश्य थी। जिस प्रकार से प्राचीनकाल मे शास्त्रीय शिक्षा के विकास पर विशेष बल दिया जाता था ठीक उसी प्रकार से आधुनिक शिक्षा के विकास में भी योगदान दिया गया है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर आधुनिक युग के महान दार्शनिक एक शिक्षाशास्त्री थे। अपने मौलिक एवम् नये विचारों के द्वारा भारतीय

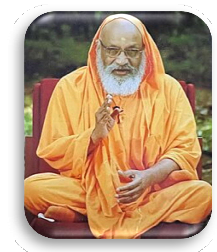


शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अपनी भारतीय संस्कृति के आधार पर भारतीय शिक्षा की नींव डाली। इन्होने अपने संदेश में शिक्षा को प्राकृतिक वातावरण में दिए जाने पर बल दिया अतः ये प्रकृतिवादी शिक्षा के पक्षधर थे। टैगोर ने समाज मे व्याप्त बुराईयों को दूर करने के लिए एक ऐसी शिक्षा की संकल्पना की जो मानव का पूर्ण एवम् सन्तुलित विकास करे जिसमे समाज एवम् राष्ट्र

दोनों की प्रगति हो जिसके लिए उन्होंने अपने समय की क्रमबद्ध तथा निष्क्रिय शिक्षा का विरोध किया और बताया कि सभी शिक्षा का उद्देश्य यह होना चाहिए कि वह बालक को जीवन तक विश्व के स्वर के मिलन से पूर्णतया अवगत कराये तथा दोनों के मेल के मध्य संतुलन स्थापित करे।

❖ स्वामी दयानन्द सरस्वती

वेदान्त के शिक्षक के रूप में, स्वामी दयानन्द ने अपने छात्रों के माध्यम से दुनिया भर में वेदांत, संस्कृत और सम्बन्धित विषयों को पढ़ाने पर प्राथमिक ध्यान देने के साथ चार पारम्परिक शिक्षण केंद्र और कई अन्य स्थापित किए हैं। ये पारम्परिक शिक्षण केंद्र अर्श विद्या' या अर्श विज्ञान', यानी ऋषियों का ज्ञान, का बैनर लेकर चलते हैं। 'अर्श' शब्द का उपयोग स्वामी दयानन्द के कई छात्रों द्वारा उनकी वंशावली को चिह्नित करने के लिए उनकी सुविधाओं के नामकरण में भी किया गया है।
स्वामी दयानंद द्वारा स्थापित चार अर्श विद्या शिक्षण केंद्र हैं—



- अर्श विद्या पीठम, स्वामी दयानंद आश्रम, ऋषिकेश 249201, उत्तराखंड, भारत
- अर्श विद्या गुरुकुलम, पीओ बॉक्स 1059, सायलोर्सबर्ग, पेंसिल्वेनिया 18353, USA
- अर्श विद्या गुरुकुलम, अनाइकट्टी, कोयंबटूर - 641108, तमिलनाडु, भारत
- अर्श विज्ञान गुरुकुलम, अमरावती रोड, नागपुर, महाराष्ट्र, 410033, भारत

ये आवासीय केंद्र पूरे वर्ष दीर्घकालिक पाठ्यक्रम, 1-2 सप्ताह का एकांतवास, सप्ताहांत अध्ययन कार्यक्रम और पारिवारिक एकांतवास आयोजित करते हैं और पढ़ाए जाने वाले विषयों में उपनिषद, भगवद गीता, ब्रह्म सूत्र और वेदांत के कई अन्य सम्बन्धित ग्रंथ शामिल हैं। अध्ययन में इन ग्रंथों पर आदि शंकराचार्य की संस्कृत टिप्पणी भी शामिल है, जिसे "भाष्य" के नाम से जाना जाता है। इन अध्ययनों के साथ-साथ संस्कृत भाषा को पाणिनी व्याकरण प्रणाली के साथ भी पढ़ाया जाता है। गुरुकुल दैनिक ध्यान और सत्संग के सत्र भी आयोजित करते हैं। इसके अतिरिक्त, योग, भारतीय शास्त्रीय संगीत, आयुर्वेद, ज्योतिष और संबद्ध अनुशासन भी सिखाए जाते हैं।

1.4 समस्या का प्रादुर्भाव

हम सभी जानते हैं कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने राष्ट्र को ऐसे घेरे में लाकर खड़ा कर दिया है जहाँ केवल पेट की पूर्ति दिखाई देती है। इस शिक्षा प्रणाली ने देश को अन्धकार मे ले जाकर नाश के कगार पर खड़ा कर दिया है। शिक्षा का स्तर दिन-प्रतिदिन गिरता जा रहा है इनके बीच तनाव ही तनाव देखने को मिलता है। ऐसे में भारत के हित और उत्कर्ष के लिए सबसे जरुरी है कि देश भर में प्राचीन भारतीय गुरुकुल शिक्षा प्रणाली अपनाई जाए और इस अंग्रेजी मैकाले-शिक्षा प्रणाली का बहिष्कार हो। क्या हम सब इस शिक्षा प्रणाली में रुचि लेते है इस प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने हेतु मेरे द्वारा यह शोध प्रबन्ध विषय वस्तु लेने की इच्छा जागृत हुई फलस्वरूप में इस शोध कार्य की प्रगति हेतु अग्रसर हुआ।

वर्तमान समय में न तो सिखाने वाला गुरु रह गया है और न ही सीखने वाला शिष्य। वर्तमान समय भौतिकता का समय है, जहाँ केवल और केवल दिखावा मात्र रह गया है। प्राचीन काल में शिक्षा को ज्ञान रूपी प्रकाश के रूप में देखा जाता था, किन्तु वर्तमान समय में शिक्षा को केवल और केवल आर्थिक उन्नति की दृष्टि से ही देखा जा रहा है; जिसके कारण शिक्षा अपनी वास्तविक पहचान को खोता जा रही है। वर्तमान समय में विद्यार्थी द्वारा शिक्षा प्राप्त करने का एकमात्र उद्देश्य सरकारी नौकरी प्राप्त करना है, अन्यत्र कुछ भी नहीं है। विद्यार्थी एक कोर्स के पश्चात दूसरा कोर्स बिना किसी निश्चित उद्देश्य के करता जाता है और सही मार्ग से भटक जाता है; जिससे वह सफलता की जगह असफलता की तरफ बढ़ता जाता है।

विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता, कर्तव्य परायणता की कमी, अध्यापकों में अपने उत्तरदायित्व के प्रति उदासीनता और बेरोजगारी जैसी अनेक समस्याएँ भारतीय शिक्षा जगत में व्याप्त हैं। इन समस्याओं का मूल कारण प्रारम्भिक शिक्षा की उपेक्षा, नींव की कमजोरी, अयोग्य अध्यापकों की नियुक्ति, ध्येय हीनता तथा विद्यार्थियों में नित्य प्रतिदिन के अध्ययन कार्य की अवहेलना जैसे बहुत से कारण हैं। विद्यार्थियों की अनुशासनहीनता, अयोग्यता तथा अकर्मण्यता के कारण आज के विद्यार्थियों में शिक्षक तथा शिक्षा के प्रति श्रद्धा की भावना का अभाव हो गया है। भारतीय शिक्षा की समस्याओं में वर्तमान परिस्थितियाँ भी महत्वपूर्ण कारण बनी हुई हैं।

नैतिक मूल्यों के अभाव में शिक्षा में विकृति आना स्वाभाविक है। वास्तव में नैतिक मूल्य एवम् शिक्षा अपने स्वाभाविक स्वरूप में एक दूसरे से गुथे हुए हैं। इनमें से एक को अलग कर देने से उसका स्वरूप स्वाभाविक न रहकर विकृत हो जाता है। आज विद्यार्थियों में व्याप्त हो रही चरित्रहीनता, अनुशासनहीनता, मर्यादाओं का अभाव, इसी विकृति को दर्शाता है। आज शिक्षा एक व्यवसाय का रूप ले चुकी है। शिक्षण संस्थाएँ देश एवम् विद्यार्थियों के कल्याण की भावना से परे अपने स्वार्थ को पूर्ण करने हेतु खोले जा रहे हैं। संस्थापकों तथा संचालकों का ध्यान विद्यार्थियों के हितों, उनकी पढ़ाई तथा योग्यता की ओर नहीं दिया जाता, बल्कि उनका ध्यान केवल अपने स्वार्थ तथा हितों पर रहता है।

अतः उपर्युक्त समस्याओं को ध्यान में रखकर ही मैंने स्वामी दयानन्द सरस्वती को पाया; जिनके शैक्षिक योगदान का अध्ययन एवम् अनुकरण निश्चित रूप से शैक्षिक जगत के उन्नयन में सहायक सिद्ध होगा।

1.5 समस्या कथन

समसामयिक परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए अध्ययन की आवश्यकता के आलोक में शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध हेतु निम्नलिखित समस्या का चयन किया गया—

"स्वामी दयानन्द सरस्वती का शैक्षिक योगदान"

1.6 अध्ययन का औचित्य

हमारे देश की शिक्षा व्यवस्था पाश्चात्य शिक्षा की ओर बढ़ रही है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली मैकाले की शिक्षा नीति और वुड के घोषणा पत्र पर आधारित है। जिसके कारण हमारी शिक्षा प्रणाली भारतीय संस्कृति सभ्यता और नैतिकता की को भूलती जा रही है। हम लोग शिक्षित तो हो रहे हैं परंतु संस्कारित और धार्मिक नहीं। इसी तरह आने वाली पीढ़ी भी शिक्षित तो हो जाएगी परंतु उसमें संस्कृति और नैतिकता का अभाव रहे।

अध्ययन का औचित्य यह जानना है कि "स्वामी दयानन्द सरस्वती" द्वारा किए जा रहे शैक्षिक प्रयासों क्या हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने किस स्थिति तक समाज में वंचित, असहाय, अनाथ बालकों को शिक्षित करने में सफलता प्राप्त की है, और किस स्थिति तक असफल रही। यह जानना महत्त्व को बढ़ा देता है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा संचालित शैक्षिक कार्यक्रमों से समाज में क्या सुधार हुए? और विकास की क्या संभावनाएं हैं? तथा इस सम्बन्ध में सुझाव प्रस्तुत करना अध्ययन का औचित्य है।

इस अध्ययन में समाज में लोगों को स्वामी दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक योगदान के बारे में जानकारी मिलेगी और वंचित, अनाथ, असहाय बच्चों की अच्छी शिक्षा का लाभ मिलेगा।

1.7 समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या

1.7.1 स्वामी दयानन्द सरस्वती

स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म तमिलनाडु के तिरुवरुर जिले के **मञ्जक्कुडि** ग्राम में 15 अगस्त 1930 को हुआ था। इनके बचपन का नाम नटराजन था।

पूज्य श्री स्वामी दयानंद सरस्वती वेदांत के एक प्रतिष्ठित, पारंपरिक शिक्षक थे। उनकी समझ की गहराई और पूर्वी और पश्चिमी दोनों संस्कृतियों की सूक्ष्म सराहना ने उन्हें एक दुर्लभ शिक्षक बना दिया जो आधुनिक श्रोताओं को गैर-द्वैत की दृष्टि का संचार कर सकता था। वह तत्कालता के साथ, स्वयं के संपूर्ण सत्य को देखने में सक्षम था।

वेदांत के एक प्रख्यात शिक्षक और संस्कृत के प्रकांड विद्वान, स्वामीजी अपने उत्कृष्ट संचार कौशल के लिए जाने जाते थे। स्वामीजी ने पांच दशकों से अधिक समय तक भारत में और 1976 से दुनिया भर में वेदांत पढ़ाया। विदेश में अपने सार्वजनिक भाषणों में, स्वामीजी ने कई प्रतिष्ठित मंचों पर बात की, और अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों, यूनेस्को और संयुक्त राष्ट्र को संबोधित किया, जहां उन्होंने मिलेनियम शांति शिखर सम्मेलन में भाग लिया।

1.7.2 शैक्षिक

शिक्षा एक विस्तृत क्षेत्र है, जिसमें शैक्षिक का आशय है— शिक्षा प्रणाली का कोई भी कार्य, प्रयोग, सहयोग, क्षेत्र इत्यादि।

शब्दकोष के अनुसार—

- शिक्षा देने वाला या जिससे शिक्षा मिले।
- शिक्षा का वह रूप, जो शिक्षा वेदांग का ज्ञाता या पंडित हो।
- शिक्षा का या शिक्षा से सम्बन्धित।

प्रस्तुत लघुशोध में शैक्षिक से तात्पर्य है— 'शिक्षा के क्षेत्र या शिक्षा से जुड़ा क्षेत्र अर्थात् शिक्षा सम्बन्धी क्षेत्र।'

1.7.3 योगदान

किसी भी कार्य में लगाया गया समय, धन तथा मेहनत योगदान कहलाता है।

प्रस्तुत लघुशोध में योगदान से तात्पर्य शैक्षिक क्षेत्र में किये जा रहे विभिन्न प्रयासों से है। किसी परिणाम के लिए किसी व्यक्ति द्वारा किया गया सहयोग 'योगदान' कहलाता है। अंग्रेजी में इसे 'Contribution' कहते हैं। योगदान का अर्थ है— सहयोग करना या हाथ बटाना। अतः योगदान का आशय है— किसी कार्य में, किसी विषय में सहयोग करना या सेवा प्रदान करना।

1.8 अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

- स्वामी दयानन्द सरस्वती की साहित्य सर्जना का अध्ययन करना।
- स्वामी दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना।
- स्वामी दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक प्रयासों का अध्ययन करना।

- स्वामी दयानन्द सरस्वती का शिक्षा में योगदान का अध्ययन करना।

1.9 अध्ययन के परिसीमांकन

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध स्वामी दयानन्द सरस्वती के व्यक्तित्व, कृतित्व, साहित्य, शैक्षिक विचारों एवम् शैक्षिक प्रयाशों के अध्ययन तक सीमित है।

1.10 अध्ययन विधि

किसी भी शोध कार्य में विषय विशेष के बारे में बोधपूर्ण तथ्यान्वेषण के लिए अनुसन्धान अध्ययन विधि शोध क्रिया को सुचारु रूप से परिचालित करने का ढंग होती है। मानव ने समस्या समाधान के लिए अनेक विधियों का प्रयोग किया है जिसका प्रयोग समस्या की प्रकृति के आधार पर किया जाता है।

प्रस्तुत लघु शोध का उद्देश्य 'स्वामी दयानन्द सरस्वती का शैक्षिक योगदान' का अध्ययन करना है। प्रस्तावित शोध में शोध की प्रकृति को देखते हुए शोधकर्ता ने अपने शोध कार्य हेतु विवरणात्मक/वर्णनात्मक अनुसन्धान विधि के अन्तर्गत **इकाई अध्ययन (Case Study) विधि** का चयन किया है। इकाई अध्ययन को वैयक्तिक अध्ययन, एक वृत्त अध्ययन, एकल/एकक अध्ययन आदि नामों से भी जाना जाता है।

इकाई अध्ययन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें एक समय में केवल एक इकाई का अत्यन्त गहराई से अध्ययन किया जाता है। वह इकाई एक व्यक्ति भी हो सकता है और एक समूची संस्था अथवा कोई नीति, प्रक्रिया, प्रथा आदि भी हो सकती है। इसी प्रकार किसी एक परिवार एक जन-समूह, एक जाति विशेष, धर्म आदि का व्यापक रूप से किया गया अध्ययन भी एकक अध्ययन के अन्तर्गत आता है। इन अध्ययनों का उद्देश्य उस इकाई का प्रत्येक दृष्टिकोण से गहन अध्ययन करके इस बात पर प्रकाश डालना होता है कि वास्तव में समस्या क्या है?, वह किस प्रकार उत्पन्न हुई है?, उसे जन्म देने वाले कारक तत्व एवम् प्रक्रियाएँ क्या हैं? तथा वे किस प्रकार गतिशील रही हैं? लक्ष्यानुसार अनुसन्धानकर्ता उस इकाई के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित तथा विभिन्न स्रोतों से सूचना सामग्री एकत्र करता है। उस सूचना सामग्री का उपयुक्त विधि से विश्लेषण करके लक्ष्यानुसार निष्कर्षों का निर्धारण करता है।

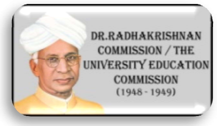
इकाई अध्ययन विधि के अन्तर्गत किसी एक सामाजिक इकाई से सम्बन्धित सभी पक्षों का व्यापक, सूक्ष्म तथा गहन अध्ययन किया जाता है।

1.11 अध्ययन का महत्व एवम् सार्थकता

वैदिक काल से ही शिक्षा नैतिक, धार्मिक व सांस्कृतिक मूल्यों के आधार पर दी जाती थी। धीर-धीरे शिक्षा में नैतिक, धार्मिक व सांस्कृतिक मूल्यों का ह्रास होने लगा, जिससे बालकों में सामाजिकता एवम् मानवीयता का अभाव पाया जाने लगा। यदि हम सामाजिक व आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करना चाहते हैं, तो शिक्षा को नवीन प्रयोगों के साथ-साथ पारम्परिक शिक्षण को जोड़ना अति आवश्यक है। जब तक बालक के अन्दर मानवीय व नैतिक मूल्यों का विकास नहीं होगा, वह समाज व राष्ट्र प्रगति नहीं कर सकता।

आज आधुनिक युग में इन मूल्यों की आवश्यकता को देखते हुए अनेक समाज सुधारकों व आयोगों ने मूल्य शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। अनेक समाज सुधारक देश के अन्दर विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से जीवन मूल्य, सांस्कृतिक मूल्य व नैतिक गुणों के साथ-साथ नवीन तकनीकी शिक्षा प्रदान कर रहे हैं।

- **राधाकृष्णन आयोग (1948-49)** ने सांस्कृतिक व मूल्यपरक शिक्षा प्रदान करने पर बल दिया है। इस आयोग ने निम्न सुझाव दिए हैं—



  - कुछ मूल मूल्यों को विकसित करना जैसे- मन की निडरता, विवेकशक्ति आदि।
  - ज्ञान के विकास के द्वारा जीवन जीने की सहज क्षमता को जगाना।
  - अपनी सांस्कृतिक विरासत के उत्थान के लिए विद्यार्थियों को इससे परिचित कराना।

- **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968**, आजादी के बाद के इतिहास में एक अहम कदम था। इस नीति का उद्देश्य राष्ट्र के प्रगति को बढ़ाना, सामान्य नागरिकता, संस्कृति और राष्ट्रीय एकता की भावना को सुदृढ़ करना था। उसने शिक्षा प्रणाली के सर्वांगीण पुनर्निमाण तथा हर स्तर पर शिक्षा की गुणवत्ता को ऊंचा उठाने पर जोर दिया गया था। साथ ही इस शिक्षा नीति में विज्ञान एवम् तकनीकी पर नैतिक मूल्यों को विकसित करने तथा शिक्षा एवम् जीवन में गहरा रिश्ता कायम रखने पर भी ध्यान दिया गया था।



- **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020** सभी के लिए समावेशी और समान गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने को लक्षित किया गया है। गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा की संरचना के रूप में राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू की जा चुकी है जिसके आधारभूत सिद्धांत में एक दृष्टि छिपी है जो इसे पूर्व की सभी शिक्षा नीतियों से विशिष्ट बनाती है। हम सभी जानते हैं कि गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा का आधार मूल्य हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा मूल्यों से परिपूर्ण उच्च गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा की आकांक्षाओं की पूर्ति किया है।

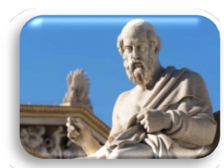


- पाश्चातय विचारकों में **प्लेटो** नैतिकता के विकास के प्रबल समर्थक थे। उनके अनुसार नैतिकता समस्त शिक्षा योजना का मेरूदण्ड है। नैतिकता से मनुष्य में सौन्दर्य, न्याय तथा प्रेम का समावेश होता है। प्लेटों ने सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को तीन भागों में विभाजित किया था।

  (क) शारीरिक उन्नयन

  (ख) विद्या संस्कार

  (ग) संगीत की शिक्षा



- महात्मा गांधी भी नैतिक सांस्कृतिक व चारित्रिक विकास के प्रबल समर्थक थे। उन्होनें अपनी आत्मकथा में लिखा है **"मैंने सदैव हृदय की संस्कृत अथवा चारित्रिक निर्माण को प्रथम स्थान** दिया है तथा चरित्र निर्माण को शिक्षा का उचित आधार माना है।"



अतः प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से स्वामी जी द्वारा लिखित साहित्य, शैक्षिक विचार, शैक्षिक प्रयास तथा सांस्कृतिक क्रियाकलापों व दैनिक दिनचर्या के बारे में गहन अध्ययन कर बालकों को सांस्कृतिक, सामाजिक मूल्यों के साथ-साथ नैतिक मूल्य की शिक्षा प्रदान की जा सकती है, जो राष्ट्रीय शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होगी।

अध्याय द्वितीय

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना
2.2 शैक्षिक योगदान से सम्बन्धित कतिपय शोध अध्ययन
2.3 अध्ययन से सम्बंधित लेख, समाचार आदि
2.4 समीक्षात्मक निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना

अनुसन्धान ज्ञान के क्षेत्र में विशेष ज्ञान के लिए नवीन प्रभावपूर्ण शोध हेतु सम्बन्धित साहित्य की जानकारी की आवश्यकता अपरिहार्य है। साधारणतया मूल्य शिक्षा साहित्य की आधारशिला है जिस पर समस्त भावी कार्य आधारित होता है यदि संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा शोध कार्य नहीं कर लेते तो किया जाने वाला कार्य प्रभावहीन हो जाता है तथा यह भी संभव हो जाता है कि किसी कार्य की पुनरावृत्ति ही हो।

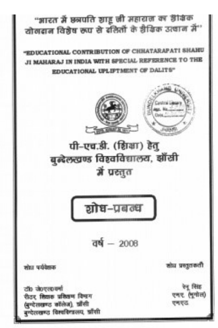
सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसन्धान से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोषों, पत्र-पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबन्धों एवं अभिलेखों से है, जिनके अध्ययन से अनुसन्धानकर्ता को अपनी समस्या चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रुपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। अतीत, वर्तमान तथा भविष्य की दिशा निर्धारण का माध्यम है। अतीत के कृत्य भावी अध्ययन के लिए दिशा-निर्देशन का कार्य करते हैं। अनुभव विगत तथा वर्तमान कार्य की प्रकृति तथा प्रक्रिया की स्पष्टता को विकसित करने में सहायक होते हैं। सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसन्धान की महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है। नव अनुसन्धान की महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है। नव अनुसन्धानकर्ता को इसके महत्त्व को समझना चाहिए।

2.2 शैक्षिक योगदान से सम्बन्धित कतिपय शोध अध्ययन



(1) **रेनू सिंह, (2008**) ने "भारत में **छत्रपति शाहू जी महाराज** का शैक्षिक योगदान विशेष रूप से दलितों के शैक्षिक उत्थान में" अध्ययन किया। निष्कर्ष स्वरूप में इन्होंने जो पाया है वह निम्नलिखित हैं—

- शिक्षा का उद्देश्य अध्यात्मवाद एवं भौतिकवाद से सम्बन्धित बताया। हरिजन शिक्षा, स्त्री शिक्षा, जनसाधारण की शिक्षा एवं धार्मिक शिक्षा पर अधिक जोर दिया।
- इन्होंने व्यवसायिक विज्ञान शिक्षा पर अधिक जोर दिया जो वर्तमान में प्रासंगिक है।
- छत्रपति शाहू जी महाराज के शैक्षिक विचारों से यह स्पष्ट है कि आदर्शवादी होते हुए भी आधुनिक जीवन की आवश्यकताओं एवं वास्तविकताओं के प्रति भली-भांति जागरूक थे। इसलिए उन्होंने जीवन के कटु सत्य की उपेक्षा नहीं की।


"भारत में छत्रपति शाहू जी महाराज का शैक्षिक योगदान विशेष रूप से दलितों के शैक्षिक उत्थान में"

"EDUCATIONAL CONTRIBUTION OF CHHATARAPATI SHAHU JI MAHARAJ IN INDIA WITH SPECIAL REFERENCE TO THE EDUCATIONAL UPLIFTMENT OF DALITS"

पी-एच.डी. (शिक्षा) हेतु
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी
में प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

वर्ष – 2008

शोध पर्यवेक्षक — शोध प्रस्तुतकर्ती

रीडर, शिक्षक प्रशिक्षण विभाग
(बुन्देलखण्ड कॉलेज), झाँसी
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

रेनू सिंह
एम.ए. (भूगोल)
एम.एड.

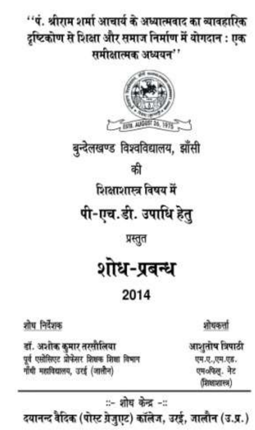
- शिक्षा के द्वारा बुद्धि, मस्तिक, शरीर, आत्मा के साथ ही हाथों का प्रशिक्षण करने के पक्ष में थे।
- राष्ट्रीय भावना का समावेश और भारत के पुनर्निर्माण की तीव्र अभिलाषा छत्रपति शाहूजी के शैक्षिक विचारों की विशेषता है।
- व्यक्ति की असीम शक्ति पर विश्वास करते थे। उनका मानना था कि वास्तविक शिक्षा से ही व्यक्ति का सर्वांगीण विकास सम्भव है।

- परीक्षा के प्रति इनका दृष्टिकोण आंतरिक परीक्षा प्रणाली है। शिक्षा दर्शन के क्षेत्र में शाहू जी के विचारों में अनेक गुण विद्यमान हैं। स्वतंत्रता, क्रियाशीलता, अनुभूति एकाग्रता, चिंतन, सामाजिकरण, सृजनात्मक, अभिव्यक्ति, व्यक्तित्व विकास, शिक्षकों का सम्मान आदि।

(2) **आशुतोष त्रिपाठी, (2014)** ने शोध हेतु "**पंडित राम श्री राम शर्मा आचार्य के अध्यात्मवाद का व्यावहारिक दृष्टिकोण शिक्षा और समाज निर्माण में योगदान का समीक्षात्मक अध्ययन**" में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किए—



- स्वास्थ्य शैक्षिक समाज के निर्माण हेतु हमें अपनी शिक्षा व्यवस्था में पूर्ण गतिविधियों और शैक्षिक क्रियाकलापों को समाहित करना होगा जो आध्यात्मिक आधारभूत मूल्यों पर आधारित है तथा जिनकी समाज निर्माण में सार्वदेशिक व सार्वकालिक उपयोगिता है।
- वैज्ञानिक अध्यात्म भारतीय संस्कृति और परम्पराओं के मूल में है और इस पर आधारित मूल्यों के सृजन और संवर्धन द्वारा ही हम वसुधैव कुटुंबकम की भावना को साकार कर सकते हैं। अस्तु पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य का अध्यात्म छात्रों को आदर्श नागरिक के रूप में भी निर्मित कर उन्हें शान्ति का संवाहक और विश्व बन्धुत्व का सृजन बनाने में पूर्णता समर्थ हैं।



"पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के अध्यात्मवाद का व्यावहारिक दृष्टिकोण से शिक्षा और समाज निर्माण में योगदान : एक समीक्षात्मक अध्ययन"

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

की

शिक्षाशास्त्र विषय में

पी-एच.डी. उपाधि हेतु

प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

2014

शोध निर्देशक	शोधकर्ता
डॉ. अशोक कुमार तरसौलिया पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर शिक्षक शिक्षा विभाग गाँधी महाविद्यालय, उरई (जालौन)	आशुतोष त्रिपाठी एम.ए.,एम.एड. एम०फिल्. नेट (शिक्षाशास्त्र)

:- शोध केन्द्र -:

दयानन्द वैदिक (पोस्ट ग्रेजुएट) कॉलेज, उरई, जालौन (उ.प्र.)

- **पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य** द्वारा प्रणयति साहित्य और दर्शन का सम्यक अनुशीलन करने के उपरांत यह सहज ही परलक्षित होता है की आचार्य श्री का सम्पूर्ण व्यक्तित्व एक स्वस्थ शैक्षिक समाज के सृजन हेतु समर्पित है।
- हम पश्चात अंधानुकरण में अपनी सांस्कृतिक विरासत को भूलाते जा रहा है जो कालांतर में हमें अपने गरिमा से गरिमा रहित कर देगी। आचार्य श्री का वैज्ञानिक अध्यात्मावाद शिक्षा व समाज निर्माण दोनों ही दृष्टियों से सर्वकालिक व सार्वदेसिक महत्त्व रखता है।
- पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य का अध्यात्मवाद वर्तमान परिवेश में पूर्णतया प्रसांगिक है। आचार्य श्री ने जहां एक ओर प्रचलित आडंबरों से उसे मुक्त कराया वहीं दूसरी ओर वह ऐसे अध्यात्म को आत्मसात करने की बात कहते है जो कोरे कर्म कांडो से दूर विशुद्ध वैज्ञानिकता पर आधारित है।
- आचार्य ने अध्यात्मवाद में सत्य, एकता, सहयोग, आडंबरहीनता, दया, अहिंसा, आत्मशांति, धर्म परायणता, निर्भयता, अंतरदर्शन उत्सर्ग, प्रयश्चित, अनेकता में एकता, सहअस्तित्व, ध्यान, परमानंद, सुचिता, विभेदीकरण, सहनशीलता जैसे अनेकानेक आधारभूत तत्व विद्यमान हैं जो छात्रों को आदर्श नागरिक बनाकर एक स्वस्थ शैक्षिक समाज के सृजन में सहायक है।
- आचार्य श्री के अध्यात्मवाद में सन्निहित आध्यात्मिक मूल्यों की समाज निर्माण में महती भूमिका है। आचार्य शिक्षा और समाज निर्माण को एक दूसरे का पूरक मानते हैं।
- आचार्य का संपूर्ण व्यक्तित्व ही विश्व बंधुत्व का सबसे बड़ा संवाहक है। आपके अध्यात्मवाद में शांतिपूर्ण सहअस्तित्व, तदानुभूति सहनशीलता, को विशेष महत्व दिया गया है और यह आधारभूत तत्व ही विश्व बंधुत्व की भावना को उद्दीप्त करते है।

(3) **शोभा तिवारी (2015)** ने वर्तमान भारतीय परिवेश में **रवीन्द्रनाथ टैगोर एवं महात्मा गाँधी जी के शैक्षिक योगदान का तुलनात्मक अध्ययन** किया। इनके अध्ययन के महत्वपूर्ण निष्कर्ष निम्नलिखित हैं—

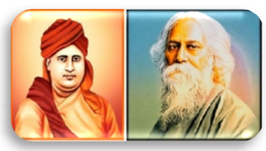


- शिक्षा दर्शन के तीन स्वरूप होते हैं—एक कल्पनात्मक, दूसरा नीतिपरक और तीसरा समीक्षात्मक। इन तीनों से शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने वालों और चिन्तन करने वालों को सहायता मिलती है।
- शिक्षा और दर्शन में घनिष्ठ सम्बन्ध है। दर्शन विचार है, तो शिक्षा उसका आचरण। शिक्षा दर्शन, जीवन दर्शन पर निर्भर करता है; क्योंकि जीवन के मूल्यों को शिक्षा के क्षेत्र में व्यवहार में परिणत करने का, संकल्पनाओं को स्पष्ट करने का काम शिक्षा दर्शन का है।



- गाँधी जी ने सत्य को ही ईश्वर माना है और इस बात का गम्भीर विवेचन किया है कि कैसे ईश्वर अथवा सत्य को प्राप्त किया जा सकता है। आत्म-शुद्धि और आत्मज्ञान से ही सत्य या ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है।
- आत्मशुद्धि, आत्मज्ञान और साधना द्वारा ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है और ईश्वर अदृश्य है। कोई न कोई शक्ति है, जो इस संसार का संचालन कर रही है।

(4) **अजय कुमार (2012)** ने **महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं रवीन्द्रनाथ टैगोर** के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया। इन्होंने अपने अध्ययन में दोनों शिक्षा शास्त्रियों के शैक्षिक विचारों की वर्तमान युग में निम्नलिखित प्रासंगिकता को बताया—



- दोनों विचारकों ने मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने की बात कही, जो वर्तमान समय के लिये भी उपयोगी है।



- दयानन्द और टैगोर दोनों ने विद्यार्थियों में देश के प्रति प्रेम एवं एकता की भावना को विकसित करने पर बल दिया; जिसकी आवश्यकता आज भी है।
- दयानन्द एवं टैगोर दोनों ने शिक्षा द्वारा बालकों के शारीरिक, मानसिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक सभी प्रकार के विकास पर बल दिया, जो वर्तमान समय के लिए भी उपयोगी है।
- दयानन्द एवं टैगोर दोनों ने शिक्षा द्वारा विद्यार्थियों में सामाजिकता के गुणों का विकास करने पर बल दिया; जिससे समाज का विकास हो सके। इस प्रकार की शिक्षा की अपेक्षा आज भी है।

(5) **सत्येन्द्र गुप्ता (2005)** ने बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में **सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं** के शैक्षिक योगदान का अध्ययन किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि—

- सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थान बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के समस्त जिला मुख्यालयों सहित तहसीलों, कस्बों एवं ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा प्रदान करने का

कार्य कर रहे हैं।

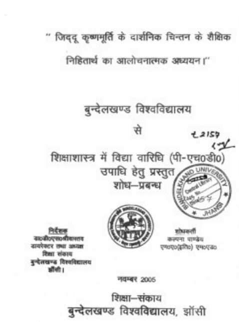


- सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के छात्रों का माध्यमिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश की हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट परीक्षाओं में प्रदर्शन, छात्रों के उत्तीर्ण प्रतिशत के आधार पर सदैव अति उच्च श्रेणी का रहा है।
- बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र के सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में अध्ययनरत् छात्र माध्यमिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश की प्रदेश स्तरीय मेधावी छात्र सूची में अपना स्थान निरन्तर बना रहे हैं।
- सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थान छात्रों के प्रवेश हेतु पारदर्शी प्रक्रियाओं का पालन कर रहे हैं।
- सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थान बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में उत्तर प्रदेश शासन के पाठ्यक्रम का परिचालन कर रहे हैं।
- सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाएँ उत्तर प्रदेश शासन के स्ववित्तपोषित विद्यालय नियमों के अनुरूप बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में संचालित की जा रही हैं।
- सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में छात्रों में लोकतांत्रिक भावनाओं के विकास हेतु सार्थक प्रयास किये जा रहे हैं।
- सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थान छात्रों में राष्ट्रीय चेतना एवं राष्ट्रभक्ति के विकास हेतु उपयुक्त वातावरण उपलब्ध करा रहे हैं।

(6) **कल्पना पाण्डेय (2005)** ने **जिद्दू कृष्ण मूर्ति** के दार्शनिक चिन्तन के शैक्षिक निहितार्थ का आलोचनात्मक अध्ययन किया। इनके अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य थे—

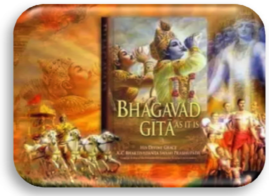


- मानव के शाश्वत जीवन को समझने के लिये जब हम तैयार करते हैं, तो उसमें वैयक्तिक, सामाजिक, मानवीय तथा राष्ट्रीय सभी प्रकार के वर्तमान शिक्षा के उद्देश्यों का समावेश हो जाता है। आज के शिक्षा उद्देश्यों के कारण ही सम्पूर्ण संसार विकसित, विकासशील और अर्द्धविकसित राष्ट्रों में बट चुका है। परिणामस्वरूप सभी में महत्वाकांक्षा और प्रतिस्पर्धा का बोल-बाला हो रहा है; जिससे व्यक्ति, व्यक्ति का शत्रु हो रहा है। राष्ट्रों के विभाजन राष्ट्रीय तथा अन्तराष्ट्रीय आतंकवाद, भय एवं दमन की प्रवृत्तियाँ विभिन्न बुराईयों को जन्म दे रही है। इस हेतु वर्तमान शिक्षा के उद्देश्य ही उत्तरदायी है। ऐसे समय में प्रत्येक व्यक्ति अपने शाश्वत जीवन को समझने के लिए प्रज्ञा तथा बोध को जाग्रत कर ले, तो संसार की सभी समस्याओं का समाधान स्वतः हो जायेगा।

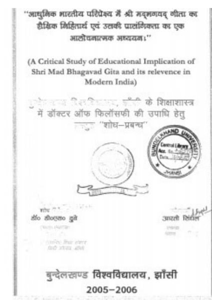


- जे० कृष्णमूर्ति जी ने शिक्षक की भूमिका को अप्रत्यक्ष में महत्वपूर्ण माना है। आज का शिक्षक ज्ञानवेता कम होता है; राजनेता, व्यवसायी, धर्म परायण आदि रूपों में अधिक दिखलायी देता है। परिणामस्वरूप शिक्षक और मानवता के बीच एक मनोवैज्ञानिक द्वन्द पैदा हो गया है।

(7) **आरती सिंघल (2006)** ने आधुनिक भारतीय परिप्रेक्ष्य में **श्रीमद्भगवद्गीता गीता** का शैक्षिक निहितार्थ एवं उसकी प्रासंगिकता का एक आलोचनात्मक अध्ययन किया। इनके द्वारा किए गये अध्ययन से निम्नलिखित प्राप्त हुए—



- प्राचीन काल में आध्यात्मिकता से ही राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक धाराएँ प्रवाहित हुई। सत्य आचरण, प्रेम, अहिंसा आदि पर ही सामाजिक जीवन की नींव रखी गयी है। भारतीय शिक्षा का आरम्भ प्रकृति की गोद में मानव की मूलभूत जिज्ञासा की शान्ति था, जिसका संरक्षण गुरुकुल में होता था। श्रीमद्भगवद्गीता वह प्राचीन ग्रन्थ है; जिसमें सभी दर्शनों की विचारधाराओं का निचोड़ है। यह केवल प्राचीन काल में ही नहीं, वरन् वर्तमान काल में भी महत्वपूर्ण, सार्वकालिक एवं वरणीय है।


"आधुनिक भारतीय परिप्रेक्ष्य में श्री मद्भगवद् गीता का शैक्षिक निहितार्थ एवं उसकी प्रासंगिकता का एक आलोचनात्मक अध्ययन।"

(A Critical Study of Educational Implication of Shri Mad Bhagavad Gita and its relevence in Modern India)

के शिक्षाशास्त्र में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी की उपाधि हेतु "शोध–प्रबन्ध"

शोध
डॉ० डी०एस० दुबे

आरती सिंघल

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी
2005–2006

- श्री गीता दर्शन में शिक्षा का आधार धर्म तथा धार्मिक क्रियाएँ है। शिक्षा प्रकाश का स्रोत है। अशिक्षित मनुष्य पशु के समान है 'विद्याविहीनः पशु। शिक्षा ज्ञान है और वह मनुष्य का तीसरा नेत्र है। ज्ञान तृतीय मनुजस्य नेत्र ज्ञान से मनुष्य के अन्तःचक्षु खुल जाते हैं। उसे आध्यात्मिक एवं अलौकिक प्रकाश मिलता है, जो जीवन का लक्ष्य है। शिक्षा के द्वारा समस्त मानव जीवन का विकास सम्भव है।

(8) हेमन्त कुमार आर्य (2019) ने माननीय **प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी** की शैक्षिक विचारधारा का अध्ययन किया। उन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि—



- शिक्षा जीवन का वह पवित्र संस्कार है, जो मनुष्य को मानवतावादी सिद्धान्तों पर चलना सिखलाती है।
- कर्तव्य, नैतिकता, उदारता, सेवा, त्याग, एवं समर्पण यह सब शिक्षा के संस्कारों का एक परिवार है, जो व्यक्ति के विचारों को शुद्ध कर उसके हित-अहित का ज्ञान करा उसे कर्तव्यनिष्ठ बनाती है।



- शिक्षा जीवन का निर्वाह नहीं निर्माण है।

(9) **धीरेन्द्र कुमार (2020)** ने **चिन्मय मिशन** का शैक्षिक योगदान का अध्ययन किया। इनके द्वारा किए गये अध्ययन के निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं—



- आज व्यक्ति को उसी शिक्षा की आवश्यकता है, जो उसे बेरोजगारी से मुक्ति दिलाकर जीवकोपार्जन करा सके।
- शिक्षा में धार्मिक प्रचार-प्रसार से लेकर शिशु विहार, बाल विहार, चिन्मय युवा केन्द्र, चिन्मय सेतुकारी जैसी संस्थाएँ चलाकर बच्चों से लेकर युवाओं को जागरूक कर रोजगार दिलाने एवं विभिन्न प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध कराने पर जोर दिया जायें।
- हमारे देश में ज्ञान का दान सदा त्यागी पुरुषों द्वारा ही होता आया है। अतः ज्ञान दान का भार पुनः त्यागियों के कन्धों पर पड़ना चाहिए।

(10) **राजू सिंह (2020)** ने **अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान** का शैक्षिक योगदान का अध्ययन किया। इनके अध्ययन के महत्वपूर्ण निष्कर्ष निम्नवत हैं—

- शिक्षा जीवनव्यापी प्रक्रिया है। इसका उद्गम मानव के भीतर से होता है।
- मार्ग के अवरोधो को दूर करने तथा मानव के सम्मुख अपने जीवन लक्ष्य को सिद्ध करने की अनुकूलता जुटाना ही सच्ची शिक्षा है।


अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान, चित्रकूट

- शिक्षा का केन्द्र बिन्दु बालक है। शिक्षा के द्वारा उसके वांछित विकास के अनुकूल परिस्थिति या वातावरण उत्पन्न किया जाना चाहिए।
- बालक की शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक इन तीनों वृत्तियों का सृजनात्मक पोषण ही शिक्षा का कार्य है।
- शिक्षा को व्यक्तिगत व सामाजिक दोनों प्रकार के उद्देश्यों के लिये महत्वपूर्ण मानते हैं और उनके मध्य सुन्दर समन्वय स्थापित करते हैं।

2.3 अध्ययन से सम्बन्धित लेख, समाचार आदि

पीएम मोदी के आध्यात्मिक गुरु स्वामी दयानंद सरस्वती की कहानी, जिन्हें UN ने वर्ष 2005 में किया था सम्मानित!

कहते हैं कि गुरु का दर्जा भगवान से भी ऊपर होता है। ऐसे ही स्वामी दयानंद सरस्वती प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के गुरु थे। साल 2015 में प्रधानमंत्री मोदी जी ने स्वामी दयानंद गिरि के आश्रम में उनसे आशीर्वाद भी लिया था। जब से पीएम मोदी यहां से होकर आएं हैं, तब से अबतक कई दिग्गज भी यहां गुरूजी के दर्शन करने के लिए आ चुके हैं। बता दें, शंकर परंपरा के वेदांत और संस्कृत शिक्षक स्वामी दयानंद सरस्वती का निधन 2015 में हो गया था। उन्होंने करीबन 50 सालों तक देश और विदेश में शिक्षा दी थी। मोदी जी से 16 साल पुराना रिश्ता स्वामी दयानंद सरस्वती और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का रिश्ता बहुत पुराना है। सोलह साल पहले भी नरेंद्र मोदी ऋषिकेश के दयानंद आश्रम में आए थे। जब-जब भी मोदी के सामने कोई मुश्किल समस्या आई, तब-तब उन्होंने गुरु से ज्ञान लिया। नरेंद्र मोदी जब गुजरात के मुख्यमंत्री थे तब उन्होंने बड़े आदर के साथ अपने गुरु दयानंद सरस्वती को गांधीनगर बुलाकर उनका स्वागत किया था।

पहली बार PM बनने के बाद ऋषिकेश जाएंगे मोदी, आश्रम में जानेंगे गुरु का हाल

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को उत्तराखंड की देवभूमि ऋषिकेश में बीजेपी कार्यकर्ताओं के बीच भाषण दिया। उन्होंने कहा, 'अगले चुनाव में कांग्रेस इतिहास बन जाएगी। आज जनता का मन बदल चुका है। हमने बेटियों के लिए स्कूल में टॉयलेट का इंतजाम करवाया। हमने बैंक के दरवाजे गरीबों के लिए खोल दिए। ...मैं चैन से नहीं बैठूंगा।' बता दें कि मोदी अपने गुरु स्वामी दयानंद गिरी की सेहत का हालचाल जाने के लिए यहां आए थे।

स्वामी दयानंद सरस्वती के समय में हिंदू धर्म में पुनर्जागरण हुआ

"वह असाधारण क्षमता के एक महान आध्यात्मिक नेता हैं, जिनका कार्यक्रम हमेशा व्यस्त रहता था। उनके समय में हिंदू धर्म ने पुनर्जागरण देखा" भाजपा की राष्ट्रीय कार्यकारी समिति के सदस्य और वरिष्ठ नेता एल. गणेशन ने दयानंद सरस्वती के बारे

में कहा, जिन्होंने अपना नश्वर शरीर यहीं छोड़ दिया था। बुधवार की रात अपने ऋषिकेश आश्रम (उत्तराखंड में) में गंगा के तट पर स्थित है।

आश्रम वेदांत और संस्कृत को बढ़ावा देता है और इस मायने में अद्वितीय है कि कक्षाएं अंग्रेजी में आयोजित की जाती हैं, फिर भी शिक्षण की प्राचीन परंपरा (संप्रदाय) का पालन और सम्मान किया जाता है। गंगाधरेश्वर के रूप में भगवान शिव को समर्पित एक मंदिर है, जो गंगा के सामने है। स्वामी दयानंद, जिन्होंने अपने भक्तों से गंगा के तट पर अंतिम सांस लेने की इच्छा व्यक्त की थी, को आरएसएस के संस्थापकों में से एक माना जाता है और वह एक प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान थे। वह कांची कामकोटि मठ से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए थे। 87 वर्षीय गणेशन का दावा है, "स्वामीजी के पास विचारों की स्पष्टता थी और वे हमेशा हर बात को कुदाम कहते थे। अपनी दूरदर्शिता और क्षमताओं के साथ वह सेवा उन्मुख संगठनों की स्थापना करने में सक्षम थे और वह धर्म रक्षा समिति के पीछे प्रेरक भावना भी थे।" पुराने द्रष्टा को अपना "मनासिगा गुरु" कहा।

स्वामी की तबीयत कुछ समय से ठीक नहीं थी और वह डायलिसिस पर थे। वह डायलिसिस जारी रखने से इनकार करते हुए न्यूयॉर्क से लौट आए और स्वेच्छा से खुद को समाधि अवस्था में वापस लाने के लिए सीधे ऋषिकेश चले गए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 11 सितंबर को ऋषिकेश में अपने गुरु स्वामी दयानंद सरस्वती से मुलाकात की और उनके स्वास्थ्य के बारे में जानकारी ली। उन्होंने उनसे इलाज जारी रखने की अपील की. हालाँकि स्वामी का एक बार फिर डायलिसिस किया गया, लेकिन 23 सितंबर को रात 10.20 बजे के आसपास उनका निधन हो गया, जिससे आश्रम में निराशा छा गई और उनके अनुयायियों में पीड़ा फैल गई।

शिक्षण के अलावा, स्वामी दयानंद सरस्वती ने पिछले 45 वर्षों से विभिन्न मानवीय प्रयासों की शुरुआत और समर्थन किया था। इनमें से सबसे दूरगामी नवंबर, 2000 में अखिल भारतीय सेवा आंदोलन की स्थापना है, जो देश के दूरदराज के इलाकों में ग्रामीणों को चिकित्सा, शैक्षिक, पोषण और बुनियादी ढांचा सहायता प्रदान करता है। इस आंदोलन को उन सभी पारंपरिक हिंदू आध्यात्मिक नेताओं का आशीर्वाद प्राप्त है जो स्वामी के समन्वय प्रयासों के माध्यम से एक एकल निकाय, आचार्य सभा के रूप में एकजुट हुए हैं।

THE HINDU

Non-violence should be practised to avoid conflicts: Swami Dayananda Saraswati

Non-violence, which is among the most important of all other universal values, should be practised by all to be able to avoid conflicts, Swami Dayananda Saraswati of Arsha Vidya Gurukulam said at Anaikatti, near here on Sunday.

Addressing the 24 anniversary celebrations of Arsha Vidya Gurukulam, he said human beings have the faculty of reason and the ability to make choices.

NDTV

PM Narendra Modi's Spiritual Guru Dayanand Saraswati Gets Padma Bhushan

Swami Dayanand Saraswati, the spiritual guru of Prime Minister Narendra Modi, would be posthumously awarded the Padma Bhushan, it was announced today.

The spiritual leader passed away last September. PM Modi went to meet his ailing guru at his Rishikesh ashram a couple of weeks before his death.

Swami Dayanand Saraswati was a monk of the Hindu monastic order and a renowned traditional teacher of Advaita Vedanta, and founder of the Arsha Vidya Gurukulam (institutions for Vedic teaching).

Its two main centres are located at Saylorsburg in Pennsylvania and Coimbatore in Tamilnadu; with a sister institution Arsha Vidya Ashram located in Rishikesh apart from over 60 other centres in India and abroad.

Another institution, Arsha Vidnyana Gurukul, is located in Nagpur. Arsha Vidya' or 'Arsha Vidnyana' means 'Knowledge of the Rishis'.

THE HINDU **Homage paid to Swami Dayananda Saraswati**

Swami Dayananda Saraswati's important contribution was in protecting the faith (dharma) and also the faithful (dharmi), for without protecting one the other cannot be, S. Gurumuthy, columnist and Convenor, Swadeshi Jagran Manch, said at the 'Shraddhanjali' organised here on Sunday. The Swamiji realised that if the Hindu faith had to be protected, the faithful/believer had to be protected because he was under attack from religious forces that believed in conversion. He, therefore, launched the Dharma Rakshana Samiti. Simultaneously, he also launched the Hindu Dharma Acharya Sabha by bringing together traditional seats of learning to give a unified voice for Hinduism.

2.4 समीक्षात्मक निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्याय में शोधकर्ता के द्वारा पूर्व में किये गए कतिपय शोधों क समीक्षात्मक अध्ययन किया गया जिसमे भारत में **छत्रपति शाहू जी महाराज का शैक्षिक योगदान विशेष रूप से दलितों के शैक्षिक उत्थान में, पंडित राम श्री राम शर्मा आचार्य के अध्यात्मवाद का व्यावहारिक दृष्टिकोण शिक्षा और समाज निर्माण में योगदान का समीक्षात्मक अध्ययन, रवीन्द्रनाथ टैगोर एवं महात्मा गाँधी जी के शैक्षिक योगदान का तुलनात्मक अध्ययन, महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन, बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के शैक्षिक योगदान, जिद्दू कृष्ण मूर्ति के दार्शनिक चिन्तन के शैक्षिक निहितार्थ का आलोचनात्मक अध्ययन, आधुनिक भारतीय परिप्रेक्ष्य में श्रीमद्भगवद्गीता का शैक्षिक निहितार्थ एवं उसकी प्रासंगिकता का एक आलोचनात्मक अध्ययन, प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी की शैक्षिक विचारधारा का अध्ययन, चिन्मय मिशन का शैक्षिक योगदान का अध्ययन, अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान का शैक्षिक योगदान का अध्ययन** किया।

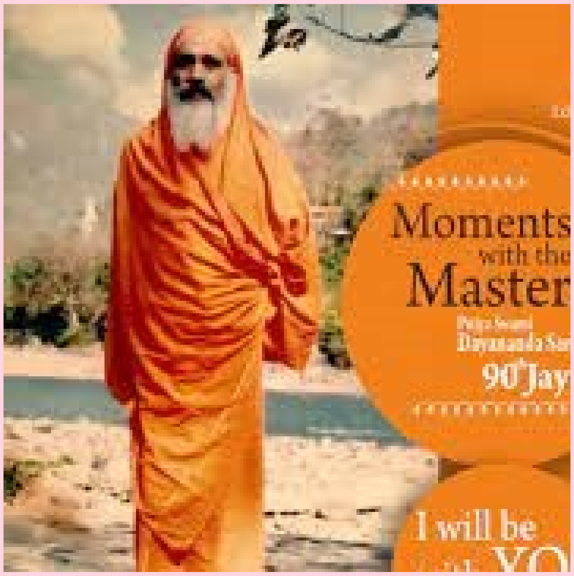
शोधकर्ता को सम्बंधित साहित्य के अध्ययनों के सर्वेक्षण से यह स्पष्ट ज्ञात हुआ कि शैक्षिक योगदान से सम्बंधित जो भी शोधकार्य समय-समय पर होते रहे हैं। उनमें स्वामी दयानन्द सरस्वती का शैक्षिक योगदान को कहीं भी सम्मिलित नहीं किया गया है।

अतः निश्चित रूप से इस शीर्षक **"स्वामी दयानन्द सरस्वती का शैक्षिक योगदान"** का अध्ययन जन मानस के लिए अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होगा।

अध्याय तृतीय

स्वामी जी की जीवन यात्रा, व्यक्तित्व एवम् कृतित्व

3.1 जीवन यात्रा
3.2 कृतित्व
3.3 सम्मान
3.4 व्यक्तित्व



तृतीय अध्याय

स्वामी जी की जीवन यात्रा, कृतित्व एवं व्यक्तित्व

3.1 जीवन यात्रा

❖ जन्म



जिन्हें संसार पूज्य स्वामी दयानन्द सरस्वती के नाम से जानता है, उन उदात्त महात्मा का जन्म तमिलनाडु के तिरुवरुर जिले के **मञ्जक्कुडि** ग्राम में 15 अगस्त 1930 को हुआ था। माता-पिता ने उनका नाम नटराजन रखा। श्री गोपाल अय्यर एवं श्रीमती वालंबल उनके पालक थे। सत्रह वर्षों के बाद उनका जन्म दिवस भारत का स्वतंत्रता दिवस बन गया। उनके बाल्यकाल में मञ्जक्कुडि ग्राम में एक ही प्राथमिक विद्यालय था, जहाँ उन्होंने अध्ययन किया।

❖ बाल्यावस्था

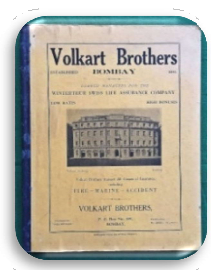
नटराजन चतुर, साहसी और नटखट नन्हे बालक थे वो हमेशा साझा करने और जो कुछ भी उनके पास होता, उसे वितरित कर देने के इच्छुक रहते। जब वे आठ वर्ष के थे उनके पिताजी का निधन हो गया। उस अल्पायु में भी वे शांत और निडर थे और कठिन अवसरों का प्रतिकार विचलित हुए बिना करते थे। उनकी माताजी ने अपने चारों पुत्रों क्रमशः श्रीनिवासन, रामचंद्रन, धर्मराजन और नटराजन का लालन पालन प्रेम और अनुशासन के साथ किया। उन्हें हिन्दू धर्म के महान गुणों से संस्कारित किया, साथ ही साथ वे अपनी ननंद के सहयोग से कृषि भूमि की देखभाल भी करती रहीं।

नटराजन ने मैट्रिक्युलेशन तक अध्ययन किया अर्थात ग्यारह वर्षों तक विद्यालयीन शिक्षा प्राप्त की । विद्यालय में ही भगवद्गीता और संस्कृत से उनका परिचय कराया जा चुका था। वे नित्य गायत्री जप करते और प्रत्येक शुक्रवार **सरस्वती** पूजा करते थे।

❖ युवावस्था



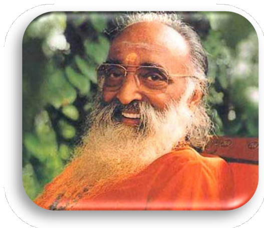
अपनी माध्यमिक शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात् नटराजन चेन्नई आ गए। यहाँ उन्होंने टंकण और आशुलेखन सीखा। उन्होंने अंग्रेजी समाचारपत्रों को पढ़ना आरम्भ किया, उन्होंने अंग्रेजी साहित्य से सम्बंधित पुस्तकों का अध्ययन भी आरम्भ कर दिया। चेन्नई से अंग्रेजी और तमिल में छपने वाले साप्ताहिक समाचारपत्र धार्मिक हिन्दू में उन्होंने अपनी पहली नौकरी की, वहां उन्होंने पत्रकारिता और छपाई सीखी। फिर उन्होंने नौकरी छोड़ दी और बैंगलोर चले गए वहाँ एक सैनिक के रूप में **वायुसेना** में भर्ती हुए। उन्होंने कठिन मैदानी प्रशिक्षण लिया। कुछ समय पश्चात् उन्होंने वायुसेना भी छोड़ दी क्योंकि इसमें उन्होंने कठोर बंधन का अनुभव किया। बाद में वे चेन्नई में, लंदन की एक्सप्रेस



न्यूज सर्विस के एक प्रतिनिधि "लेंस" से जुड़ गए। वहाँ उन्होंने उच्चस्तरीय पत्रकारिता सीखी। उनकी अगली और अंतिम नौकरी **वोल्कार्ट ब्रदर्स** पर टंकक की रही।

❖ स्वामी चिन्मयानंद के छात्र के रूप में

वर्ष 1953 में **स्वामी चिन्मयानंद** मुण्डक उपनिषद् पर आधारित ज्ञान यज्ञ हेतु चेन्नई पधारे। अपने चचेरे भाई अक्षयम् के



साथ नटराजन इस ज्ञान यज्ञ में सम्मिलित हुए, इसका उनके युवा मानस पर गंभीर प्रभाव पड़ा और एक नए नटराजन का जन्म हुआ। इसके बाद उन्होंने ज्ञान यज्ञ के मध्य ही निष्ठापूर्वक प्रूफ रीडिंग एवं अन्य सेवा कार्यों में एक विनम्र सहायक के रूप में, स्वामी चिन्मयानंदजी की सेवा आरम्भ कर दी। प्रातः काल में वैदिक मंत्रोच्चार सीखने के लिए वे वेद पाठशाला से जुड़ गए, उन्होंने तैत्तिरीय उपनिषद् का मंत्रोच्चार सीखा। संध्याकाल में वो संस्कृत का अध्ययन करते थे।

अगले वर्ष **स्वामी चिन्मयानंद** ने एक और ज्ञान यज्ञ का आयोजन किया जो तैत्तिरीय उपनिषद् पर आधारित था। उन्होंने पुनः अपनी विविध सेवा गतिविधियों जैसे टकण, प्रूफ रीडिंग, होम की व्यवस्था, भजनों, अन्नदानम् आदि के माध्यम से उनकी सेवा की अब वे नवस्थापित चिन्मय मिशन की गतिविधियों में पूर्णरूपेण रम गए थे। वे चिन्मय मिशन के महासचिव बना दिए गए और वे चेन्नई में कई स्थानों पर सत्संगों का आयोजन करने लगे।

कुछ समय पश्चात् उन्हे उत्तरकाशी में स्वामी चिन्मयानंदजी के दीक्षा गुरु स्वामी तपोवन महाराजजी के दर्शन का सुअवसर प्राप्त हुआ। स्वामी जी ने उन्हें कहा **"आत्मतत्त्व को जानना ही मूल साधना है, कोई दिन निश्चित करो और संसार से निवृत्ति लो"**।

वर्ष 1957 में नटराजन, चिन्मय मिशन की पत्रिका त्यागी के संपादक के रूप में बेंगलुरु पहुंचे। इस अवधि में उन्होंने कई आध्यात्मिक विषयों पर चिंतन-मनन किया। आत्मा का अनुभव "असीम / अपरिच्छिन्न मैं" रूप से किया जाना चाहिए, यह सामान्य धारणा उनके मानस में यह प्रश्न बारम्बार उठाती थी कि समय से बंधा, सीमित / परिच्छिन्न "मैं" उस "असीम / अपरिच्छिन्न" का अनुभव कैसे कर सकता हूँ? इसमें उन्हें कुछ कठिनाई का अनुभव हुआ। परन्तु उस समय वे इसका समाधान न ढूंढ सके। इस बात ने उन्हें अपनी आध्यात्मिक यात्रा में और आगे बढ़ने को प्रेरित किया। कुछ समय पश्चात् स्वामी चिन्मयानंदजी ने उन्हें भगवद्गीता के संपादन और उसे चार खण्डों में प्रस्तुत करने का कार्य सौंपकर मुंबई भेज दिया।

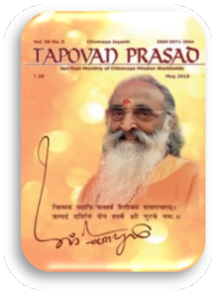
❖ स्वामी प्रणवानंद के छात्र के रूप में

नटराजन के मन में कई अनुत्तरित आध्यात्मिक प्रश्न थे। स्वामी चिन्मयानंदजी ने उन्हे **स्वामी प्रणवानंद** से मिलने को कहा। अब नटराजन आंध्रप्रदेश स्थित स्वामी प्रणवानंदजी के गुडीवाड़ा आश्रम पहुंच गए और वहीं अध्ययनरत हो गए। **स्वामी प्रणवानंद** ने प्रमाण रूप से स्वीकार्य और आत्मज्ञान के एकमात्र साधन के रूप में वेदांत की महत्ता को स्पष्ट किया। उन्होंने मोक्ष के साधन के रूप में "वासनाओं के त्याग" के सिद्धांत का पूर्णरूपेण खंडन किया। "मैं" / आत्मा की सत् चित् आनंदस्वरूपता को समझना ही आत्मसाक्षात्कार की शिक्षा है, आत्मा के भौतिक साक्षात्कार का तो प्रश्न ही नहीं उठता है। "मैं" तो शाश्वत् रूप से स्वयमेव देदीप्यमान और प्रकट ही रहता है। नटराजन की वेदांत दृष्टि जाग्रत हुई, तदन्तर शङ्कर भाष्य के अध्ययन ने इस शिक्षा को आत्मसात् करने में उनकी सहायता की।



❖ सन्यास

स्वामी चिन्मयानंदजी चेन्नई में एक ज्ञान यज्ञ कर रहे थे। वे जिस घर में ठहरे थे, उन्होंने नटराजन को रात्रि वहीं व्यतीत करने और उपवास रखने को कहा। उन्होंने उनसे ये भी कहा कि सुबह नाई आएगा और उनका मुंडन करेगा। पंडितजी आये और



विराज होम सम्पन्न किया। स्वामी चिन्मयानंदजी ने उन्हे सन्यास मन्त्र दिया। नटराजन की स्वामी चिन्मयानन्दजी में इतनी श्रद्धा थी कि वे कोई पूर्व संकेत दिए बिना भी उन्हे सन्यास दे सकते थे, 4 मार्च 1962 को शिवरात्रि के पवित्र दिवस पर नटराजन स्वामी दयानंद सरस्वती हो गये। स्वामी दयानंद सरस्वती साधु जीवन के अभ्यस्त होने उत्तरकाशी और गंगोत्री गये। वर्ष 1963 में स्वामी जी मुंबई स्थित सांदीपनि पहुंचे, अब वे चिन्मय मिशन की पत्रिका **तपोवन प्रसाद** के संपादक बना दिये गये।

❖ ऋषिकेश में साधु रूप में



कुछ समय पश्चात् शास्त्रों के गहन अध्ययन हेतु, उन्होंने ऋषिकेश प्रस्थान किया यहाँ स्वामी जी **आंध्र आश्रम** में ठहरे। प्रातःकाल वे काली कंबलिवाले क्षेत्र में तो संध्याकाल में नेपाली क्षेत्र में भिक्षाटन करते। कुछ समय पश्चात् क्षेत्रीय कारीगरों की सहायता से कुटिया बनाकर वे पुरानी झाड़ी क्षेत्र में ही निवास करने लगे।

❖ स्वामी तारानंद गिरी के छात्र के रूप में

स्वामी जी ब्रह्म सूत्र भाष्य रत्न प्रभा टीका का अध्ययन कैलाश आश्रम के प्रातः कालीन सत्रों में, **स्वामी तारानंदजी गिरी** की छत्रछाया में करते। तदन्तर अपनी कुटिया पर कुछ ब्रह्मचारियों के अध्यापन का कार्य भी करते। उन्होंने स्वामी विशुद्धानंदजी से पाणिनीकृत संस्कृत व्याकरण का अध्ययन भी किया। स्वामी तारानंदजी गिरी की छत्रछाया में उनकी वेदांत और शास्त्र दृष्टि उत्कृष्ट हो गई। स्वामी जी का वर्ष 1964 से 1967 तक ऋषिकेश में व्यतीत हुआ तीन वर्षों का समय, शांति और आनंद से परिपूर्ण था।



❖ स्वामी दयानंद आश्रम, ऋषिकेश

यह पहली संस्था है जिसने पुरानी झाड़ी क्षेत्र ऋषिकेश में स्वामी जी की छत्रछाया में, वर्ष 1967 में आकार लेना आरम्भ



किया। वर्ष 1982 में आश्रम का विस्तार हुआ और इसका नामकरण **अर्श विद्या पीठम्** हुआ। यह हिमालय की तलहटी और गंगाजी के मनोरम् तट पर स्थित है। यहाँ वेदात सम्बन्धी दीर्घ एवं लघु अवधियों वाले शिक्षण कार्यक्रमों का सञ्चालन किया जाता है। स्वामी जी के संसार भर में फैले शिष्य यहाँ आध्यात्मिक शिविरों का आयोजन करते हैं। ये स्थान स्वामी जी को इतना प्रिय था कि उनकी महासमाधी के लिए भी इसे ही चुना गया। **ऋषिकेश आश्रम** में उनकी महासमाधी के उपरांत **अधिष्ठानम्** नाम से यहाँ उनके स्मारक का निर्माण किया गया है। यहाँ स्वामी जी की प्रतिमा और एक शिवलिंग **दयानंदेश्वर** की प्राणप्रतिष्ठा, अनुयाइयों हेतु शुभाशीष स्वरुप की गई है।

❖ महासमाधि



स्वामी जी ने एक परिपूर्ण जीवन जिया, उन्होंने विविध क्षेत्रों जैसे वेदान्त शिक्षण, समाजसेवा, कर्नाटक संगीत, हिन्दू समुदाय का नेतृत्व और अंतर्राष्ट्रीय पटल पर हिंदुत्व को मुखरित कर विश्व इतिहास पर अपनी अमिट छाप छोड़ी। उन्होंने 23 सितम्बर 2015 को ऋषिकेश में महासमाधी ली।

3.2 **कृतित्व**

- स्वामी चिन्मयानंदजी के परामर्शानुसार, वर्ष 1967 से 1972 तक, स्वामी जी ने सम्पूर्ण भारतवर्ष में गीता ज्ञान यज्ञों का सञ्चालन किया।



- वर्ष 1972 से 1979 के मध्य **सांदीपनि साधनालय, मुंबई** पर सञ्चालित हुए दो दीर्घावधि आवासीय वेदात शिक्षण कार्यक्रमों के प्रथम आचार्य स्वामी दयानंद ही थे। वेदात, संस्कृत, मंत्रोच्चार और ध्यानादि के शिक्षण के लिए उपयुक्त पाठ्यक्रम की रूप रेखा भी उन्होंने ही तैयार की थी।



- सेलर्सबर्ग गुरुकुलम् पर सञ्चालित हुए दीर्घकालीन वेदांत शिक्षण कार्यक्रमों के अंतर्गत, स्वामी जी द्वारा गीताजी पर दिए गये समस्त व्याख्यानों को **भगवद्गीता गृह अध्ययन माला** के रूप में लिपिबद्ध किया गया है। यह स्वामी जी द्वारा मानवता के प्रति किया गया, एक उल्लेखनीय योगदान है। इसका समग्र अध्ययन करने वाले पाठकों के गीताजी की शिक्षाओं से सम्बंधित सभी प्रश्नों का समाधान हो जाता है। भगवद्गीता गृह अध्ययन माला ने समस्त संसार में स्वाध्याय समूहों के द्वारा अनवरत शास्त्राध्ययन का मार्ग प्रशस्त किया है, इसकी सहायता से पाठक अपने घर पर रहकर भी गुरुकुल शिक्षा का लाभ ले सकते हैं।



- वर्ष 1999 में वैदिक संस्कृति का शंखनाद करने और जनसाधारण में इसका प्रचार प्रसार करने हेतु, स्वामी जी ने **धर्म रक्षण समिति** की स्थापना की। जुलाई 1999 में स्वामी जी ने, चेन्नई में **धर्मपरिवर्तन हिंसा है** के सन्देश के साथ एक वक्तव्य दिया। इसने धर्म परिवर्तन के फलस्वरूप होने वाले संघर्ष और हिंसा के प्रति विश्व समुदाय की सामूहिक चेतना को आंदोलित किया। इस महत्वपूर्ण विषय पर अपने विस्तृत उद्बोधनों द्वारा उन्होंने समकालीन नेतृत्व को प्रेरित किया।



- चेन्नई में वर्ष 2000 में, स्वामी जी ने **हिन्दू धर्म आचार्य सभा** का संयोजन किया। यह प्रथम अवसर था, जब हिंदुत्व के विभिन्न पंथों के आचार्यों का समागम हुआ। वर्ष 2000 से, तीन वर्षों में एक बार सभी आचार्य मिलते हैं और हिंदुत्व की रक्षा हेतु आवश्यक उपायों और साधनों पर चर्चा करते हैं। हिन्दू धर्म आचार्य सभा अब समय हिंदुत्व का एकमात्र आधिकारिक स्वर बन गई है। वर्ष 2006 में जब शासन ने तिरुपति मंदिर का न्यायक्षेत्र दो पर्वतों तक

सीमित किया। तब तिरुपति घोषणा द्वारा सभा ने सप्त पर्वतों पर पुनराधिकार के लिए शासन से सतत् संघर्ष किया। पवित्र स्थानों की शुचिता बनाये रखने के अपने प्रयासों के अंतर्गत, सभा ने राम सेतु और टिहरी बांध विवाद पर अपना पक्ष दृढ़ता से रखा।

- स्वामी जी ने संस्कृत में अनगिनत कृतियों की रचना की है, जिन्हें सुप्रसिद्ध कर्नाटक संगीतज्ञों ने स्वर दिया है। हमारी सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण और प्रोत्साहन हेतु, संगीत एवं नृत्यकला के विख्यात कलाकारों को अर्श कला भूषण उपाधि द्वारा सम्मानित किया गया है। उनकी रचना **भो शम्भो** शास्त्रीय संगीत समुदाय में अत्यंत लोकप्रिय है।



- स्वामी जी के माध्यम से तमिलनाडु, केरल, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक आदि राज्यों में **वेद पाठशालाओं** की स्थापना हुई है।
- तमिल भाषा में दक्षिण भारत के प्राचीन शिवालयों में, भगवान् शिव की पारम्परिक स्तुतियों का गायन करने वाले **ओदुवार** कहलाते हैं। स्वामी जी ने ओदुवारों की सेवाओं से वंचित्, प्राचीन शिवालयों में 35 ओदुवारों को नियुक्त किया है। **पन्नीरु तिरुमुरै** का गायन करने वाले ओदुवारों के लिए अभिनन्दन समारोहों का आयोजन भी किया जाता है, यह तमिल शैव सिद्धांत दर्शन की व्याख्या करने वाले स्तोत्रों का संग्रह है।



- वर्ष 2010 में कुम्भकोणम् के समीप, **तिरुविडैमरुदूर** स्थित **श्रीमहालिंगस्वामी मंदिर के पांच रथों** के पुनर्निर्माण में स्वामी जी सहायक हुए। इससे अस्सी वर्षों से निलंबित वार्षिक रथोत्सव पर्व को नवजीवन मिला।



- पूज्य स्वामी जी के निर्देश और प्रेरणा से स्वामिनी प्रमानंदा जी ने विद्यालयीन छात्रों को **हिन्दू संस्कृति** की शिक्षा देने हेतु एक समय कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की। इस कार्यक्रम का शिक्षण देश के अनेक विद्यालयों में तथा संसार के विभिन्न स्थानों पर साप्ताहिक कार्यक्रम के अंतर्गत होता है।
- **वैश्विक गतिविधियां**
    - वर्ष 1979 में **सांदीपनि पश्चिम्**, पिअर्सी, कैलिफोर्निया, अमेरिका पर दीर्घकालीन वेदांत शिक्षण कार्यक्रम का सञ्चालन स्वामी जी के आचार्यत्व में किया गया।
    - पिअर्सी कार्यक्रम के समापन के पश्चात् वर्ष 1982 में, स्वामी जी बिना किसी संस्थागत् संलिप्तता के स्वतंत्र रूप से यात्रायें और **जन सभायें** करते रहे।
    - वर्ष 2000 में, स्वामी जी ने **संयुक्त राष्ट्र में विश्व शांति शताब्दी** शिखरवाती को सम्बोधित किया था। इसके फलस्वरूप धार्मिक एवं आध्यात्मिक प्रमुखों की विश्व समिति का निर्माण हुआ। इससे धार्मिक विविधता के संरक्षणार्थ कांग्रेस के आयोजन तथा अंतर- पंथीय संवाद का मार्ग प्रशस्त हुआ।
    - आचार्य सभा अन्य अहिंसक परम्पराओं जैसे **यहूदी पंथ** से भी संवादरत है। वर्ष 2007 से **हिन्दू-यहूदी** बैठकें होती रही हैं। इन संवादों से यह निष्कर्ष निकला कि हिंदुत्व सामान्य अवधारणा के विपरीत मूर्तिपूजक पंथ नहीं है।
    - **हिन्दू- बौद्ध** संवाद में दोनों पंथ के प्रमुख इस बात पर सहमत हुए कि पूर्व के ज्ञान का प्रतिनिधित्व करने वाले दोनों पंथों के अनुयाइयों को कंधे से कन्धा मिलकर खड़ा होना चाहिए।

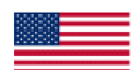
- वर्ष 2008 में नीदरलैंड के हेग में अंतरपंथीय सम्मलेन का आयोजन हुआ। यहाँ स्वामी जी मानवाधिकारों को पुनर्परिभाषित करने वाले उपबंधों को अंतिम प्रलेख में समाविष्ट किये जाने में सहायक हुए। ये उपबंध परस्पर सम्मान और सहयोग के माध्यम से शांति और सामंजस्य बनाये रखने पर बल देते हैं और घोषणा करते हैं कि धर्म परिवर्तन धार्मिक स्वतंत्रता और परस्पर सम्मान की भावना का हनन करता है। दूसरे शब्दों में धर्म पालन की स्वतंत्रता व परस्पर सम्मान का उल्लंघन नहीं होना चाहिए।

3.3 सम्मान

- स्वामी जी के **षठाभिषेकम् समारोह** (80 वर्ष पूर्ण करने और 1000 पूर्णिमाओं का साक्षी होने पर इसका आयोजन किया जाता है) का आयोजन 20 से 22 जुलाई 2011 के मध्य **CODISSIA** (कोयम्बटूर जिला लघु उद्योग संघ), कोयम्बटूर पर किया गया था, इस अभूतपूर्व आयोजन में स्वामी जी के 5000 अनुयाइयों ने सहभागिता की थी।
- अध्यात्म जगत में स्वामी जी **विशेषज्ञ संप्रेषक** के रूप में जाने जाते थे। वे अध्यात्म विज्ञान में नवागंतुक साधक के साथ-साथ किसी प्रखर विद्वान को भी शास्त्र दृष्टि का ज्ञान दे सकते थे, संवाद कर सकते थे। उन्होंने आदिशङ्कराचार्य की परम्परानुसार ही वेदान्त का शिक्षण किया। गुरु-शिष्य परम्परा में उनके उल्लेखनीय योगदान को प्रमाणित करते हुए 26 अप्रैल 2012 को आदरणीय श्रृंगेरी पीठ द्वारा उन्हें **आदिशङ्कराचार्य अलंकरण** से सम्मानित किया गया।



- हिन्दू पञ्चाग के अनुसार स्वामी जी के 83 वें जन्मदिवस के सम्मान में, कांग्रेस सदस्या आदरणीया नेंसी पेलोसी के आग्रह पर अमेरिकी संसद भवन पर **अमेरिकी राष्ट्रध्वध्वज** का आरोहण किया गया।



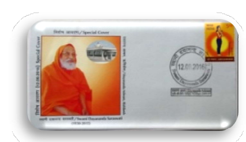
- 10 जनवरी 2015 को अद्वैत आश्रम, कोलाथुर, केरल द्वारा स्वामी जी को **"वेदान्त रत्न"** की उपाधि से अलंकृत किया गया।



- उन्हे भारत सरकार द्वारा अध्यात्म के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए, 25 जनवरी 2016 को मरणोपरांत, **पद्मभूषण** से सम्मानित किया गया। पद्मभूषण भारत के प्रतिष्ठित नागरिक सम्मानों में से एक है। कई विद्वानों का ये विचार है कि स्वामी जी को प्रदान किए जाने से पद्मभूषण की ही शोभा बढ़ी है।



- सितम्बर 12, 2016 को स्वामी जी की प्रथम पुण्यतिथि **आराधना** के अवसर पर उनकी स्मृति में सम्माननीय राज्यपाल, उत्तराखण्ड शासन द्वारा **विशेष डाक चित्र** का अनावरण किया गया।



- सम्माननीय राज्यपाल, उत्तराखण्ड शासन द्वारा पुरानी झाड़ी क्षेत्र जहाँ स्वामी दयानंद आश्रम स्थित है का नाम परिवर्तन कर '**स्वामी दयानंद नगर**' किया गया।

3.4 व्यक्तित्व

❖ स्वामी जी का सन्देश

"यद्यपि वह आत्मन जो परिपूर्ण है, वह तुम ही हो तथापि तुम परिच्छिन्नता / छोटेपन से यस्त हो। क्योंकि तुम अपने सत्स्वरूप से अनभिज्ञ हो, इस अज्ञान को आत्मज्ञान ही दूर कर सकता है। इसके लिए तुम्हे एक ऐसे शिक्षक की आवश्यकता है जो शास्त्रों का ज्ञाता हो और किसी निपुण कलाकार की भाँति चतुराई से शब्दों का सुन्दर प्रयोग करता हो।" वैदिक ऋषियों का यह सनातन ज्ञान ही स्वामीजी का सन्देश है।

सभी पंथ ईश्वर को निमित्त कारण रूप से स्वीकार करते हैं, परन्तु हिंदुत्व ईश्वर को निमित्त कारण (कुंभकार के साथ साथ उपादान कारण (मिट्टी) भी मानता है। जब हम ईश्वर को अखिल ब्रह्माण्ड का अभिन्न निमित्त उपादान कारण मानते हैं तब "यहाँ जो कुछ भी है" अर्थात "समस्त सूक्ष्म स्थूल जगत्" को ईश्वर ही पाते हैं। स्वामीजी ने ये भी स्पष्ट किया है कि भौतिक (स्थूल), मनोवैज्ञानिक (सूक्ष्म) और अन्य जो भी सत्ता है, वह ईश्वर की सत्ता मात्र ही नहीं है, अपितु ईश्वर ही है। जब हम उस महान सत्ता (सर्वकालिक / सर्वव्यापी / सर्वज्ञ) को जान जाते हैं तो और कुछ भी जानना शेष नहीं रहता है। किसी भी संशय के लिए लेशमात्र भी स्थान नहीं बचता है।

❖ स्वामी जी की विलक्षणता

स्वामी जी की वेदांत व्याख्या अद्वितीय थी। वे इस बात पर बल देते थे कि **"आत्मज्ञान हेतु वेदांत ही एकमात्र प्रमाण है"।** उन्होंने स्पष्ट किया कि मूल्य (नैतिक और जीवन मूल्य) किसी साधक को सुपात्र बनाते हैं। संस्कृत शब्दों का अनुवाद कर, उनके अपेक्षाकृत अस्पष्ट अंग्रेजी समानार्थी शब्दों का प्रयोग कर अर्थ का अनर्थ करने के स्थान पर वे सदैव महत्वपूर्ण संस्कृत शब्दों का यथारूप प्रयोग करने को प्राथमिकता देते थे। सरल और चुटीली व्यंग्यात्मक शैली से अपनी कक्षाओं में गंभीर विषयों के अध्यापन के मध्य भी वे छात्रों को सदैव उत्साहपूर्ण बनाये रखते। उनकी कक्षाओं में नीरसता का प्रवेश वर्जित था।

"कर्मयोग, प्रत्येक कर्म निपुणता / चतुराई से करना नहीं है, अपितु दृष्टिकोण का परिवर्तन मात्र है। जहाँ आप ईश्वरार्पण बुद्धि से कर्म करते हो और प्रसादबुद्धि से कर्मफलों को स्वीकार करते हो" उनके अनुसार यही कर्मयोग की व्याख्या है।

उन्होंने विश्व प्रसिद्द शिक्षको द्वारा प्रतिपादित् ऐसे सभी सिद्धांतों को सिरे से अस्वीकार किया, जो सम्प्रदाय की मूल भावना के विरुद्ध थे। उन्होंने उस विचार को भी अस्वीकार किया कि मोक्ष के अनेक मार्ग हैं। उन्होंने इस धारणा का भी खंडन किया कि सभी पंथों का लक्ष्य एक ही है। उन्होंने दृढ़तापूर्वक यह कहा कि **"मोक्ष यहीं और अभी है", मोक्ष (आध्यात्मिक परम लक्ष्य) की प्राप्ति इसी शरीर और जन्म में संभव है, यही हिंदुत्व का शंखनाद है।** उन्होंने कहा है कि मोक्ष ध्यान करने से नहीं, अपितु शास्त्राध्ययन से ही संभव है। उन्होंने समझाया कि वासनाओं से पूर्णरूपेण मुक्त होना असंभव है। उन्होंने स्पष्ट किया कि मन को सदा के लिए विचारशून्य करना ना तो संभव है ना मोक्ष के लिए आवश्यक ही है।

उन्होंने इस बात पर बल दिया कि आत्मा को "मैं कौन हूँ?" की पड़ताल करने मात्र से, नहीं जाना जा सकता। अपने सुस्पष्ट शिक्षण से उन्होंने वेदांत का रहस्योद्घाटन किया। उनका शिक्षण सहज किन्तु इतना प्रभावोत्पादक् होता था कि सन्देश अंतर्मन तक पहुँच जाता था और श्रोता मंत्रमुग्ध हो जाते थे । उन्होंने विभिन्न आयुवर्गों और सभ्यताओं के लोगों को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया। स्वामीजी शिक्षकों के शिक्षक थे, उन्होंने 250 से अधिक सन्यासी शिक्षकों और इतने ही गृहस्थ शिक्षकों

को प्रशिक्षित किया। सम्प्रदाय की मूल भावना के अनुसार प्रतिपादित, उनके वेदांत शिक्षण की धारा "ज्ञान परम्परा" द्वारा, विश्वभर में फैले उनके असंख्य अनुयाइयों के माध्यम से अक्षुण्ण अनवरत् बनी हुई है। अपनी वृद्धावस्था, दुर्बल शरीर और कभी कभी असह्य पीड़ा होते हुए भी वे अपने छात्रों को उत्साहपूर्वक पढ़ाते थे और आनंद का ही अनुभव करते थे।

❖ स्वामी जी के गुण

स्वामीजी के करुणा, सरलता, अनुराग, वात्सल्य, संवेदनशीलता, सहृदयता, समत्व आदि गुण भगवत्कृपा के साकार रूप थे। दया उनका विशिष्ट लक्षण थी। वो सदैव कहते थे कि समय से बंधे प्राणिमात्र में दया, उस असीम अपरिच्छिन्न की गतिशील अभिव्यक्ति है।

भगवान् श्री कृष्ण ने गीताजी में जिसकी व्याख्या की है, ऐसे 'ज्ञानी' का वर्णन करने में शब्द अपर्याप्त और अक्षम प्रतीत होते हैं। समस्याओं को सक्रिय रूप से चिह्नित करने के अतिरिक्त, वे सम्पूर्ण समाज के उत्थान के लिए मानवीय प्रयासों (सेवा) की आवश्यकता, धर्मान्तरण से होने वाली सांस्कृतिक हानि को गंभीरता से लेने, ललित कलाओं के संरक्षण और विश्वभर में शिक्षकों, सन्यासियों और नेतृत्व के विकासादि समाधानों पर बल देते रहे।

❖ स्वामी जी की उद्धरणयोग्य उक्तियाँ

- उपभोक्ता से कहीं अधिक योगदाता बनें अपनी हड़पने की सोच को साझा करने की सोच में बदलें।
- धर्मातरण हिंसा है, धर्मान्तरण मानवाधिकारों का हनन है।
- यहाँ जो कुछ भी है, सर्वस्व ईश्वर ही है। संसार को अपना सर्वश्रेष्ठ देंगे तो आप सर्वश्रेष्ठ ही पाएंगे।
- हम जीवन जीना तब आरम्भ करते हैं, जब हम अधिक प्रसन्नता, बुद्धिमत्ता और स्वतंत्रता उत्पन्न करने वाला योगदान करते हैं तब तक हम, मात्र समय व्यतीत कर रहे होते हैं दिन की रात और रात का दिन करना जीना नहीं होता।
- आपकी स्वतंत्रता उस सीमा तक ही है जहाँ तक आप, औरों को जो वो हैं वो होने की स्वतंत्रता देते हैं।
- बंधनमुक्त होने के लिए आप औरों को बदलना चाहते हैं, परन्तु ऐसा कभी नहीं होता औरों को पूर्णरुपेण यथारूप स्वीकारिये, ऐसा करके ही आप बंधनमुक्त होंगे।
- पुस्तकों, उपकरणों, सर्वस्व में ईश्वर के दर्शन करने हेतु आपको एक पवित्र हृदय और स्पष्ट दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। ईश्वर से पृथक् कुछ है ही नहीं, यह विशिष्ट सिद्धांत इसे संभव बनाता है।
- हम बहुइश्वरवादी नहीं हैं, हम तो एकेश्वरवादी भी नहीं हैं, हम तो ईश्वरमात्र की उपासना करते हैं। विभिन्न नाम रूपों में हम उसका ही आह्वान करते हैं। प्रत्येक भाव ईश्वरीय है, यही एक परिपक्व व्यक्ति की ईश्वर दृष्टि है।
- आपका वास्तविक स्वरुप तो सत् (सत्यस्वरूप), चित् (ज्ञानस्वरूप), आनंद (सुखस्वरूप) है। शुद्ध चैतन्य रूपसे जीव और ब्रह्म में कोई भेद है ही नहीं।

❖ प्रचलित मत जिनका स्वामी जी ने खंडन किया

क्रम	मत	खण्डन
1	हिंदुत्व बहुइश्वरवादी है।	यह एक दोषपूर्ण अवधारणा है। हम अनेक ईश्वरों की उपासना नहीं करते, हम तो एक ईश्वर की उपासना भी नहीं करते, हम तो ईश्वरमात्र की उपासना करते हैं।
2	हिन्दू मूर्तिपूजक हैं।	यह भी दोषपूर्ण है। संसार में कोई भी मूर्तिपूजा नही करता। हम तो मूर्ति में ईश्वर का आह्वान करते हैं और मूर्ति के माध्यम से ईश्वर की उपासना करते हैं।
3	कर्म का सिद्धांत भाग्यवादी है।	ऐसा भी नहीं है, कर्म के सिद्धांत की समझ मानवमात्र को उत्तरदायी बनाती है। सतर्कता से कर्म करने को प्रेरित करती है।
4	कर्मयोग निपुणता से कार्य करना है।	ऐसा भी नहीं है, कर्मयोग कोई क्रिया नहीं है। कर्मयोग तो एक प्रवृत्ति है जो हमारे प्रत्येक कर्म को उपासना बना देती है।
5	मोक्ष भी एक अनुभूति है।	यह भी अनुचित है। मोक्ष उस का ज्ञान है, जहाँ अनुभव गूंगा हो जाता है।
6	कर्मयोग, भक्ति, नाम संकीर्तन या ध्यान करने से मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है।	यह भी दोषपूर्ण है। साधनायें करके एक सुपात्र मन तो पाया जा सकता है, परन्तु मोक्ष मात्र ज्ञान से ही पाया जा सकता है। और ज्ञान किसी श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ गुरु की छत्रछाया में वेदांत शास्त्राध्ययन से ही पाया जा सकता है।
7	मोक्ष (आध्यात्मिक परम लक्ष्य) मरणोपरांत ही पाया जा सकता है।	ये भी अनुचित है मोक्ष इस शरीर और जन्म में ही संभव है।
8	धर्मान्तरण धार्मिक स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति है।	यह भी दोषपूर्ण है धर्मान्तरण हिंसा है।
9	सभी पंथों का लक्ष्य एक ही है।	यह भी अनुचित है, ऐसा कदापि नही है।

अध्याय चतुर्थ

स्वामी जी द्वारा स्थापित शैक्षणिक संस्थान

चतुर्थ अध्याय

स्वामी जी द्वारा स्थापित शैक्षणिक संस्थान

4.1 AIM for SEVA

भारतीय समाज की जरूरतों के प्रति पूज्य स्वामीजी की संवेदनशीलता ने उन्हें भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में अच्छी शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल की कमी जैसी समस्याओं की सराहना और सहानुभूति दी है।

AIM for SEVA, पूज्य स्वामी दयानंद सरस्वती की ग्रामीण भारत की एक आदिवासी महिला के साथ हुई बातचीत के परिणामस्वरूप उभरा।

- **Aim**

छात्रालयम और स्कूलों के माध्यम से अंतिम छोर तक शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करना।

- **Vision**
  - सेवा एवम् देखभाल के नेटवर्क के माध्यम से समाज को बदलना।
  - शहरी-ग्रामीण विभाजन को पाटना।
  - प्रत्येक व्यक्ति को राष्ट्र की प्रगति में योगदान करने के लिए सशक्त बनाना।

- **Mission**

मूल्य-आधारित शिक्षा के माध्यम से सशक्तिकरण और छत्रालयम (निःशुल्क छात्र छात्रावास) और स्कूलों के नेटवर्क के माध्यम से ग्रामीण भारत के बच्चों तक पहुँचना।

- **Philosophy**

सतत विकास के सेवा दर्शन का उद्देश्य तीन स्तंभों द्वारा समर्थित है: देखभाल, नवाचार, शिक्षा। प्रत्येक परियोजना इन स्तंभों में से एक (या अधिक) के साथ प्रतिध्वनित होती है, इस प्रकार सेवा के लिए ग्रामीण भारत की गहराई तक पहुंचने के लिए AIM for SEVA की संरचना और रूप सुनिश्चित करती है।

- **The Movement**

वर्ष 2000 में शुरू किया गया, AIM for SEVA का मुख्य आधार ग्रामीण शिक्षा है, जिसका प्रमुख कार्यक्रम छात्रालयम है। इसका रहस्योद्घाटन स्थल नीलगिरि की तलहटी में था। 1999 में, जब पूज्यस्वामी दयानंद सरस्वती ने तमिलनाडु में अनाइकट्टी रेंज की पहाड़ियों का दौरा किया, तो वे पहाड़ों के भीतर बसे 100 से अधिक छोटे-छोटे गांवों को देखकर आश्चर्यचकित रह गए। एक गाँव में, उन्होंने इरुला जनजाति की एक बुजुर्ग महिला से पूछा, "आपको किस मदद की ज़रूरत है?" पापम्मल (Papammal) नाम की महिला ने तुरंत जवाब दिया, " सामी (Saami) , मेरे बच्चों को स्कूल जाने के लिए सात किलोमीटर पैदल चलना पड़ता है, जंगल के उस पार, जो बहुत असुरक्षित है। आप एक छात्रावास क्यों नहीं बनाते और उन्हें स्कूल जाने में मदद क्यों नहीं करते?"

पूज्य स्वामी दयानंद सरस्वती ने अनुमान लगाया कि भारत में अंतिम मील की शिक्षा समस्या को पूरे देश में एक छात्रावास नेटवर्क स्थापित करके हल किया जा सकता है, जिसमें छात्रावास स्कूलों के करीब स्थित होंगे। छात्र इस स्थान पर रह सकते थे और पास के स्कूल में जा सकते थे।

4.1.1 छात्रालयम

- **Flagship Programme: Chatralayams**

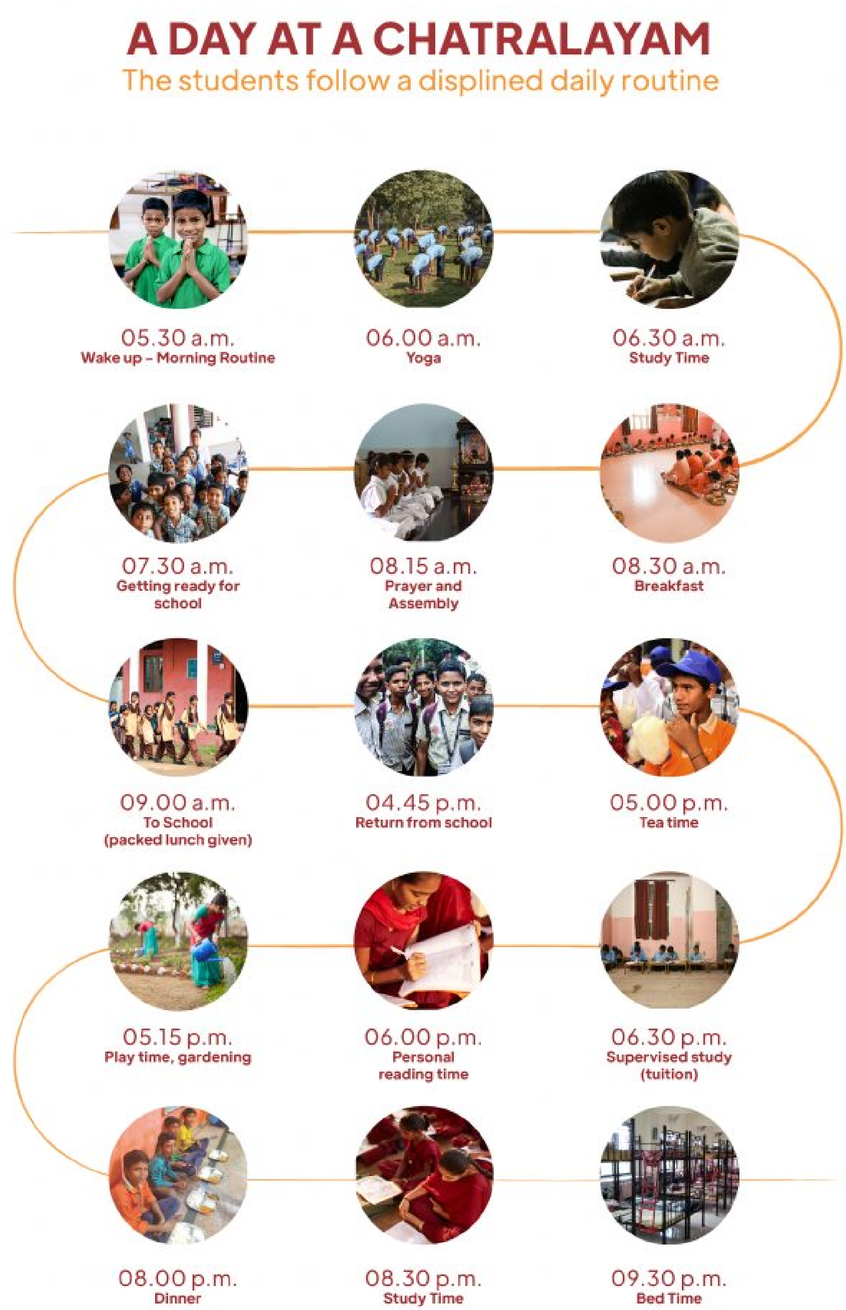
छात्रालयम की परिकल्पना ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों के छात्रों के लिए शिक्षा तक निर्बाध पहुंच प्रदान करने वाले निःशुल्क छात्र छात्रावासों के रूप में की गई है। छात्रालयम से जुड़ने वाले बच्चे नजदीकी स्कूल में जाकर इसी माहौल में पढ़ते और रहते हैं।

- **History and Current Presence**
  - 32 लड़कों के साथ पहला छात्रालयम 2001 में तमिलनाडु के अनाइकट्टी में स्थापित किया गया था।
  - AIM For SEVA वर्तमान में 17 राज्यों में 94 छात्रालयम चला रहा है।
  - इनमें से 24 लड़कियों के लिए और बाकी लड़कों के लिए हैं।
- **Typical Student Profile**
  - 90% से अधिक छात्र पहली पीढ़ी के शिक्षार्थी हैं।
  - छात्र अधिकतर ग्रामीण/ कृषि/ दैनिक वेतन भोगी/ आदिवासी पृष्ठभूमि से हैं।
  - वे कम आय वाले परिवारों से आते हैं।
- **What do Chatralayams Offer?**
  - Access to the Nearest School (usually within walking distance)
  - 3 Nutritious Meals
  - Uniforms and Clothing
  - Academic Tutoring
  - Sports and Yoga
  - Enriching cultural and spiritual co-curricular activities
  - Medical care: Regular health check-ups

- **Chatralayam Presence across India**

State	Girls	Boys	Total
Andhra Pradesh	03	09	12
Bihar	0	01	01
Chhattisgarh	0	01	01
Gujarat	01	06	07
Haryana	0	01	01
Karnataka	05	06	11
Kerala	0	01	01
Madhya Pradesh	02	08	10
Maharashtra	01	10	11
Odisha	0	02	02
Puducherry	01	0	01
Rajasthan	0	02	02
Tamilnadu	08	13	21
Telangana	01	04	05
Uttarkhand	01	02	03
Uttar Pradesh	01	03	04
West Bengal	0	01	01
TOTAL	24	70	94

छात्रलायम की दिनचर्या



4.1.2 Educational Institutions

- **Swami Dayananda Rotary Matriculation Higher Secondary School**
    - पता: Kadalur village, Chengalpet district, Tamil Nadu
    - स्थापना: 2005
    - कक्षाएँ: KG से 12 तक
    - पहुंच: कदलूर के आसपास के 59 गांव
    - संबद्धता: मैट्रिकुलेशन स्कूल बोर्ड, तमिलनाडु
  - **स्कूल सुविधाएं और कार्यक्रम**
    - विशाल और स्मार्ट-बोर्ड-सक्षम कक्षाएँ
    - कंप्यूटर और विज्ञान प्रयोगशालाएँ
    - अच्छी तरह से भंडारित पुस्तकालय
    - खेल का मैदान
    - विकास के लिए कला और विकास के लिए रंगमंच
    - खेल- हैंडबॉल, कबड्डी और एथलेटिक्स पर विशेष ध्यान देने के साथ
    - क्लब- सांस्कृतिक, स्वच्छता, सामान्य ज्ञान, प्रकृति और कौशल विकास
    - परिवहन
- **Swami Dayananda Vidyasramam Nursery & Primary School**
    - पता: Karagur village, Dharmapuri district, Tamil Nadu
    - प्रारंभ: 2014
    - कक्षाएँ: KG से 5 तक
    - पहुंच: धर्मपुरी के आसपास के 40 पड़ोसी गांव
  - **स्कूल में सुविधाएं**
    - विशाल कक्षाएँ
    - कंप्यूटर लैब्स
    - अच्छी तरह से भंडारित पुस्तकालय
    - खेल का मैदान
    - परिवहन

❖ Swami Dayananda Saraswati Vidyalaya

Introduction



स्वामी दयानंद सरस्वती विद्यालय,पादली खुर्द, बड़वाह, खरगौन (मध्य प्रदेश) AIM for Seva की एक इकाई, 2019 में स्थापित की गई थी। स्कूल 232 छात्रों के साथ शुरू हुआ और इसमें लोअर किंडरगार्टन से कक्षा दसवीं तक की कक्षाएं हैं। छात्र संख्या 232 छात्रों की है, जिसमें 6 जिलों के 34 गांवों से छात्र आते हैं। स्कूल के बगल में लड़कों के लिए 'धर्म कीर्ति डोगरा छात्रालयम' और लड़कियों के लिए 'स्वामी दयानंद छात्रालयम' है।

स्कूल परिसर 5 एकड़ में फैला हुआ है, और इसमें 27 कक्षाएँ, एक कंप्यूटर लैब (26 कंप्यूटरों के साथ), एक पूर्ण विज्ञान प्रयोगशाला (जिसमें एक समय में 30 छात्र रह सकते हैं), किताबों के साथ एक पुस्तकालय और एक खेल का मैदान है। आरामदायक फर्नीचर से सुसज्जित हवादार विशाल कक्षाएँ बच्चों को सीखने के लिए सही माहौल बनाने में मदद करती हैं। स्कूल बसों और वैन का प्रावधान छात्रों के लिए सुरक्षित परिवहन के मामले में मदद करता है।

शिक्षण स्टाफ के सदस्य मध्य प्रदेश शिक्षा बोर्ड के मानदंडों के अनुसार अच्छी तरह से योग्य और प्रशिक्षित हैं। प्रिंसिपल, सुश्री देबजानी दत्त के कुशल मार्गदर्शन में, वे बच्चे को प्रश्न पूछने, अन्वेषण करने और सीखने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। स्वामी दयानंद सरस्वती विद्यालय में, हम स्कूली शिक्षा को ज्ञान प्राप्त करने, कौशल के विकास और समझ की खोज को सक्षम करने का एक साधन मानते हैं।

VISION

युवा दिमागों को देखभाल करने वाले और प्रतिबद्ध व्यक्तियों के रूप में विकसित करने के लिए प्रेरित करना और चुनौती देना, जो अपने सभी कार्यों में उत्कृष्टता के लिए प्रयास करते हैं और आजीवन सीखते रहते हैं।

MISSION

जिज्ञासु दिमागों को प्रोत्साहित करना और खोज और अन्वेषण के लिए उत्साह जगाना।

छात्र विकास के सभी पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करना: शैक्षणिक, बौद्धिक, रचनात्मक, सामाजिक, शारीरिक, नैतिक और भावनात्मक।

❖ Inder and Prabha Sharma Girls Senior Secondary School



- इंदर & प्रभा शर्मा गर्ल्स स्कूल, AIM for Seva की एक इकाई, 2009 में स्थापित की गई थी। स्कूल 80 छात्रों के साथ शुरू हुआ और 1 से 8 तक कक्षाएं प्रदान करता था। आज, स्कूल एक पूर्ण उच्च माध्यमिक शैक्षणिक संस्थान है, और लोअर किंडरगार्टन से कक्षा 12 तक की कक्षाएं संचालित होती हैं। छात्र संख्या 336 छात्रों की है, जिनमें 14 जिलों के 56 गांवों से लड़कियां आती हैं। स्कूल के बगल में लड़कियों के लिए गायत्री देवी AIM for Seva छात्रालयम है, जो भारत के ग्रामीण और आदिवासी हिस्सों के छात्रों को छात्रालयम पूर्ण लाभ प्रदान करता है।
- स्कूल परिसर 4 एकड़ में फैला हुआ है, जिसमें 15 कक्षाएँ, एक कंप्यूटर लैब (30 कंप्यूटरों के साथ), एक पूर्ण विज्ञान प्रयोगशाला (जो एक समय में 30 छात्रों को समायोजित कर सकती है), एक पुस्तकालय (3490 पुस्तकों के साथ), और एक खेल का मैदान है। आरामदायक फर्नीचर से सुसज्जित हवादार विशाल कक्षाएँ बच्चे को सीखने के लिए सही माहौल बनाने में मदद करती हैं। दो स्कूल बसों और एक वैन का प्रावधान छात्रों के लिए सुरक्षित परिवहन की दृष्टि से मदद करता है।
- शिक्षण स्टाफ के सदस्य मध्य प्रदेश शिक्षा बोर्ड के मानदंडों के अनुसार अच्छी तरह से योग्य और प्रशिक्षित हैं। प्रधानाचार्य के कुशल मार्गदर्शन से वे बच्चे को प्रश्न पूछने, खोजबीन करने और सीखने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। इंदर & प्रभा शर्मा गर्ल्स स्कूल में, हम स्कूली शिक्षा को ज्ञान प्राप्त करने, कौशल के विकास और समझ की खोज को सक्षम करने का एक साधन मानते हैं।

4.2 स्वामी दयानंद जयवर्तनवेलु आयुर्वेदालय

वर्ष 2014 में स्वामीजी ने '**स्वामी दयानंद जयवर्तनवेलु आयुर्वेदालय** का शुभारम्भ किया। यह 20 शायिकाओं की सुविधा से युक्त आयुर्वेदिक उपचार केंद्र है। यहाँ व्यक्तिगत देखभाल के साथ प्रामाणिक आयुर्वेदिक उपचार किया जाता है। यह आनैक्कट्टि गुरुकुलम् से मात्र 3 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

4.3 अर्श विद्या अनुसन्धान एवं प्रकाशन ट्रस्ट

स्वामीजी के निर्देशन में स्थापित **अर्श विद्या अनुसन्धान एवं प्रकाशन ट्रस्ट, चेन्नई** द्वारा पूज्य स्वामीजी की पुस्तकों का सुरुचिपूर्ण प्रकाशन किया जाता है। भारतीय प्रकाशक संघ, नई दिल्ली द्वारा उनकी अनेक पुस्तकें पुरस्कृत की जा चुकी हैं।

4.4 अर्श विज्ञान गुरुकुलम्, नागपुर



वर्ष 2004 में, स्वामीजी ने अर्श विज्ञान गुरुकुलम्, नागपुर का शुभारम्भ किया। यहाँ आरम्भ से ही संस्कृत और वेदांत सम्बन्धी दीर्घकालीन कार्यक्रम होते रहे हैं।

4.5 स्वामी दयानंद शैक्षणिक ट्रस्ट, मञ्जक्कुडि

वर्ष 2003 में, स्वामीजी के अनुयाईयों ने उनके जन्मस्थल मञ्जक्कुडि ग्राम में **स्वामी दयानंद शैक्षणिक ट्रस्ट** का गठन किया। ट्रस्ट ने स्वामी दयानंद सरस्वती कला एवं विज्ञान महाविद्यालय और सेम्मनगुडी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, स्वामी दयानंद शैक्षणिक संस्था से धरोहर स्वरुप पाये।



ट्रस्ट तीन विद्यालयों, एक कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, चार छात्रावासों, एक आयुर्वेदिक स्वास्थ्य केंद्र. एक व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र, एक वृद्धाश्रम और एक वेद पाठशाला का सञ्चालन करती है। वर्तमान में 180 ग्रामों से सम्बन्ध रखने वाले 4800 छात्र यहाँ अध्ययनरत हैं। यहाँ बाल-विहार से स्नातकोत्तर पर्यन्त जिनमें एम. फिल. भी सम्मिलित है, के रूप में एक परिपूर्ण शिक्षण कार्यक्रम उपलब्ध है।

4.6 आनैक्कट्टि गुरुकुलम्

वर्ष 1990 में **अर्श विद्या गुरुकुलम्, आनैक्कट्टि**, कोयम्बटूर की स्थापना की गई। आरक्षित वन्य क्षेत्र से सटे और साठ एकड़ क्षेत्र में फैले हुए, इस आश्रम में भगवान् दक्षिणामूर्ति का मंदिर है जिसके निर्मल, शांत और दैवीय वातावरण में दर्शनार्थी अपनी सुधबुध खो बैठते हैं। यह स्थान साधकों को वेदांत के गहन अध्ययन के लिए आदर्श वातावरण उपलब्ध करवाता है। यहाँ सञ्चालित किये गये पांचवें दीर्घकालीन आवासीय वेदांत शिक्षण कार्यक्रम का सफल समापन सितम्बर 2017 में हुआ है। स्वामीजी के संन्यस्त छात्र यहाँ अल्पावधि वाले शिविरों का सञ्चालन भी करते हैं।



आनैक्कट्टि गुरुकुलम स्थित स्वामीजी की कुटिया का रूपांतरण स्वामी दयानंद स्मारक के रूप में कर दिया गया है, अब इसे "गुरु तीर्थ" के नाम से जाना जाता है। स्वामीजी के अध्ययन, शयन और भोजन कक्ष इनसे सम्बंधित बड़े बड़े चित्रों से सजाये गये हैं। बैठक कक्ष में स्वामीजी की एक मूर्ति की स्थापना की गई है और इसे ध्यान कक्ष में रूपांतरित कर दिया गया है। पुनर्संयोजित स्वामी दयानंद चित्र वीथिका का नामकरण "गुरु स्मृति" किया गया है, यहाँ स्वामीजी के जीवनवृन्त और योगदानों की सुन्दर चित्रात्मक झांकी प्रस्तुत की गई है।



4.7 सेलर्सबर्ग गुरुकुलम्



वर्ष 1985 में अमेरिकी अनुयाइयों के अनुरोध पर **सेलर्सबर्ग, पेन्सिलवेनिया**, अमेरिका में **अर्श विद्या गुरुकुलम्** की स्थापना की गई तथा स्वामीजी द्वारा 1986 से 1989 तक चले प्रथम दीर्घकालीन शिक्षण कार्यक्रम का सञ्चालन किया गया। अब सेलर्सबर्ग गुरुकुलम् वयस्कों, किशोरों और बालकों हेतु शिविरों और कक्षाओं के आयोजन हेतु लोकप्रिय स्थान बन गया। इस आश्रम में भगवान् दक्षिणामूर्ति का एक मंदिर और पुस्तक भंडार भी है। अमेरिका में हिन्दू संस्कृति के प्रति जागरूकता बढ़ाने में इस गुरुकुलम् का महत्वपूर्ण योगदान है।

4.8 निःशुल्क ई-पुस्तकों हेतु वेबसाइट

Blessings of Pujya Swamiji
ARSHA AVINASH FOUNDATION

दिसंबर 2014 में स्वामीजी ने, निःशुल्क ई-पुस्तकों हेतु वेबसाइट **www.arshaavinash.in** का शुभारम्भ किया। इसका प्रबंधन अर्ष अविनाश संस्थान द्वारा किया जाता है। इस वेबसाइट का उद्देश्य समस्त अर्श विद्या परिवार एवं साधकों हेतु वेदान्त, संस्कृत और भारतीय सभ्यता से सम्बंधित पुस्तकों और संसाधनों की सुलभता सुनिश्चित करना है। वर्तमान में वेबसाइट पर अंग्रेजी, तमिल और हिंदी भाषाओं में पुस्तकें उपलब्ध हैं।

अध्याय पञ्चम

स्वामी जी का शैक्षिक योगदान

5.1 पुस्तकें
5.2 शैक्षिक विचार



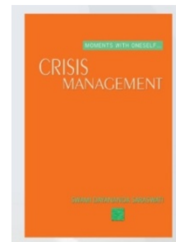
पञ्चम अध्याय

स्वामी जी का शैक्षिक योगदान

5.1 पुस्तकें

5.1.1 शैक्षिक पुस्तकें

- **संकट प्रबंधन (Crisis Management)**

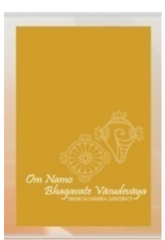


संकट प्रबंधन का तात्पर्य या तो संकट से बचना है या वस्तुनिष्ठ तरीके से संकट का सामना करना है। बहुत बार किसी व्यक्ति द्वारा सोच और व्यवहार के पैटर्न के संदर्भ में आदतों के कारण सबसे पहले संकट पैदा किया जाता है। इन आदतों को बदलकर ऐसे संकटों से बचा जा सकता है। जहां संकट किसी के नियंत्रण से परे कारकों द्वारा निर्मित होता है, उसे जीवन की वास्तविकताओं को समझने की सहायता से इसे प्रबंधित करना होता है।

इस पुस्तक में इस पहलू पर चर्चा की गई है कि किसी संकट से कैसे बचा जाए, क्योंकि मुझे डर है कि यह हम ही हैं जो अपने व्यक्तिगत जीवन के साथ-साथ अपने पेशेवर, सामाजिक, राष्ट्रीय और यहां तक कि अंतरराष्ट्रीय जीवन में भी अच्छी संख्या में संकट पैदा करते हैं। यदि हम किसी स्थिति पर सही समय पर सही तरीके से कार्य करते हैं तो बड़े संकटों से बचा जा सकता है। एक पुरानी कहावत है, 'समय में एक सिलाई नौ बचाती है,' जो बिलकुल सच है।

दो प्रवृत्तियाँ हैं जो हमें सही समय पर कार्य करने से रोकती हैं। अगर हम इन प्रवृत्तियों को अपने अंदर पहचान लें और उन्हें खत्म कर दें तो हम कई संकटों से बच सकते हैं।

- **ओम नमो भगवते वासुदेवाय (Om Namo Bhagavate Vasudevaya)**

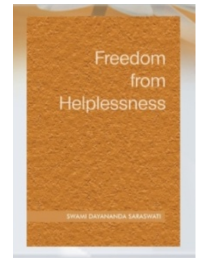


ओम नमो भगवते वासुदेवाय एक बहुत ही लोकप्रिय मंत्र है। एक मंत्र वह है जिसे आशीर्वाद के स्रोत के रूप में खोजा गया था, ऋषि द्वारा देखा गया था। एक ऋषि एक ऋषि है, जो दुनिया की भलाई के लिए, एक मंत्र देता है जिसे उसने देखा था। प्रत्येक मंत्र ऋषि के संकल्प, हमें आशीर्वाद देने के उनके विचार के साथ हमारे पास आता है। जब हम एक मंत्र का जाप करते हैं, तो ऋषि के साथ-साथ देवता का भी आवाहन किया जाता है और मंत्र का अर्थ भी बताया जाता है।

एक योग शिक्षक के रूप में मंत्रों से संबंधित परंपरा को जानना चाहिए। नमो भगवते वासुदेवाय में, ओम न मो भा ग व ते वा सु दे वा य सहित बारह अक्षरों वाले चार शब्द हैं। इसलिए, इस मंत्र को द्वादशाक्षरी (बारह अक्षरों वाला) कहा जाता है। ॐ नमहशिवे पर प्रसिद्ध पंचाक्षरी, पंच-अक्षर मंत्र है। नमस्सिवाय मंत्र है और इसमें ॐ जोड़ा जाता है- ॐ न मस् सी वय। ॐ नमो नारायणाय आठ अक्षरों वाला मंत्र है, अष्टाक्षरी-ओम न मो ना रा य णा य। छह अक्षर का मंत्र सदाकर्त है। गायत्री संस्कृत भाषा के एक छंद का नाम है जिसमें चौबीस अक्षर होते हैं। लोकप्रिय मंत्र "गायत्री" अपने छंद का नाम रखता है, भले ही उसका नाम सावित्री है।

व्यक्ति इस बारह अक्षर के मंत्र, ॐ नमो भगवते वासुदेवाय, के द्वारा भगवान, भगवान का आह्वान करता है, अपना नमः, वंदन, समर्पण करता है। ओम का अर्थ है एक अक्षर में भगवान का आह्वान करना। संस्कृत में पूर्वसर्गों को शब्दों के साथ ही जोड़ा जाता है। तो, भगवते का अर्थ है 'भगवान को' और नमः का अर्थ है "(मेरा) प्रणाम।"

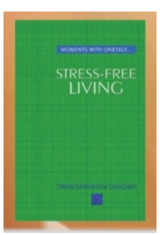
- **लाचारी से मुक्ति (Freedom from Helplessness)**



एक निश्चित रेखा है जो आधुनिक समाज को प्राचीन से अलग करती है। सामान्य तौर पर, मुझे लगता है, जीवन हमेशा आधुनिक होता है। पतंजलि, जिन्होंने mahabshay लिखी थी, अपनी प्रस्तावना में बताते हैं कि कैसे आधुनिकतावादी ध्वन्यात्मक सीखने की पुरानी शैली का पालन नहीं करते हैं। जब मैंने उसे पढ़ा तो मुझे लगा कि जिस युग को हम प्राचीन मानते हैं, वह पतंजलि के लिए आधुनिक था। यह आज अलग नहीं है। जब कोई बूढ़ा व्यक्ति आपसे बात करता है, तो वह हमेशा कहता है, "मेरे दिनों में यह बहुत अच्छा था।" जब मैं स्कूल में था तो गाँव के बड़े लोग कहा करते थे, "हमारे स्कूल के दिन निश्चित रूप से अच्छे थे, अब जैसे नहीं हैं।" आज, मैं अपनी उम्र के लोगों को आधुनिक छात्रों को यह कहते हुए देखता हूं, "ओह! सब कुछ पतित हो गया है। आज के छात्र रास्ता भटक गए हैं।" मुझे लगता है कि जनरेशन गैप कोई नई खोज नहीं है। यह हमेशा से था क्योंकि पहला बच्चा पैदा होने पर माँ आमतौर पर 25 या 26 साल की होती है। अगर बच्चे का जन्म मां की उम्र के बराबर होता है, तो कोई जेनरेशन गैप नहीं होगा, जो कभी नहीं होने वाला है।

हालाँकि, एक बात निश्चित है। जब हम आधुनिक कहते हैं, तो वास्तव में हमारा मतलब यह होता है कि हमारे पूर्वजों के विपरीत, हमें हर दिन विभिन्न प्रकार की घटनाओं का जवाब देना पड़ता है। निश्चित रूप से हमारे पूर्वज, कुछ सदियों पहले, एक तरह से बेहतर थे क्योंकि उनके पास प्रतिक्रिया देने के लिए केवल कुछ घटनाएं थीं। सोचने के समकालीन तरीके के लिए ऐसी स्थिति असंभव होगी। यह भी सच नहीं है।

- **तनाव मुक्त जीवन (Stress Free Living)**



जब किसी को दिन-ब-दिन दुनिया के साथ बातचीत करनी होती है, तो तनाव की अपेक्षा की जाती है। हालांकि, अगर कोई अपने सामने आने वाली चीजों के साथ सामंजस्य स्थापित कर सकता है, तो कोई भावनात्मक तनाव नहीं है। जब कोई पसंद करता है कि उसे क्या करना है, तो वह क्या करता है कोई तनाव नहीं पैदा कर सकता। किसी को कोई चीज पसंद आ सकती है, लेकिन साथ ही अगर वह किसी को दोषी या उदास छोड़ दे तो वह तनाव का शिकार हो जाता है। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति को शराब पीना बहुत पसंद हो सकता है, लेकिन हमारे समाज में इसके साथ एक कलंक भी जुड़ा हुआ है। अत: शराब का सेवन करने वाले व्यक्ति को अपराध बोध होना लाजिमी है और उसके घर में कोई सुख नहीं है। इससे तनाव होगा।

दुनिया के साथ किसी का संपर्क अपरिहार्य है, तनाव एक स्वाभाविक परिणाम है। व्यक्ति को संसार से संबंधित होना पड़ता है, क्योंकि जीवन संसार से संबंध रखता है। यदि कोई जीवित और जीवित के बीच का अंतर देख सकता है, तो मैं कह सकता हूं कि जीवित रहने के लिए किसी को दुनिया से संबंधित होने की आवश्यकता नहीं है। नींद में व्यक्ति जीवित तो रहता है लेकिन किसी से संबंध नहीं रखता। तो भी कोमा में। सपने में, व्यक्ति उन वस्तुओं से संबंधित होता है जिनके बारे में वह सपने देखता है, बिना यह जाने कि वे स्वयं के प्रक्षेपण हैं।

मैं संबंधित हूं और इसलिए जीवित है। जब मैं जागता हूं, तो मैं दुनिया से संबंधित होता हूं। हालांकि, जब मैं संबंधित होता हूं, तो या तो मैं उससे सामंजस्य स्थापित कर सकता हूं जिससे मैं संबंधित हूं या मैं असहमति का स्रोत हो सकता हूं। अगर दूसरा

असामंजस्य का स्रोत है, तो मैं खुद को सुरक्षित रख सकता हूं अगर मेरे पास उस सुरक्षा को बनाए रखने के लिए कुछ जगह है। इसलिए, तनाव-मुक्त जीवन जीने के लिए, किसी को यह सीखना होगा कि उसके पास सद्भाव में रहने की क्षमता है और साथ ही दूसरों के परेशान करने वाले कार्यों और व्यवहार के भावनात्मक शिकार होने से खुद को बचाने के लिए पर्याप्त जगह की आवश्यकता है।

- **गुरु पूर्णिमा (Gurupurnima)**



जैसे आपके पास फादर्स डे और मदर्स डे है, वैसे ही गुरुपूर्णिमा गुरु दिवस है। इसे व्यास-पूर्णिमा भी कहा जाता है, भगवान व्यास की जयंती, जो शिक्षकों के पदानुक्रम में एक ऊंचा स्थान रखते हैं। यद्यपि वेद व्यास के गुरु थे, हम वेद व्यास को उन शिक्षकों के बीच की कड़ी के रूप में देखते हैं जिन्हें हम जानते हैं और उन शिक्षकों को जिन्हें हम नहीं जानते हैं।

- **दान (Danam)**



आज हमारा समाज बहुत ही अजीब स्थिति में है। हम ऐसी संस्कृति से आए हैं जहां कोई प्रतिस्पर्धा नहीं थी। प्रत्येक याजक एक याजक का पुत्र था; हर धोबी, नाई, लोहार और सुनार को अपना पेशा, हुनर अपने पिता से विरासत में मिला है। हमारा समाज ऐसा ही रहा है, और आज भी एक पुजारी का बेटा पुजारी नहीं हो सकता है, लेकिन हर पुजारी अभी भी एक पुजारी का बेटा है। इसलिए, एक गैर-प्रतिस्पर्धी समाज से अब हमें एक प्रतिस्पर्धी संस्कृति में धकेल दिया गया है, जिसका अर्थ है कि हर कोई असुरक्षित हो जाता है। इस तरह की प्रतियोगिता हमारी संस्कृति के लिए पराई है, और जितना अधिक हम अपनी संस्कृति से विमुख होते हैं, उतना ही हम अपने आप से, अपने कल्याण से विमुख होते जाते हैं।

प्रतिस्पर्धा आज दी गई है, लेकिन सामान्य नियमों के बिना कोई प्रतिस्पर्धा नहीं है। हमें प्रतिस्पर्धा की संस्कृति में खुद को संभालने के लिए बढ़ने की जरूरत है। हमें नियमों के अनुरूप होना है, दूसरों के लिए स्थान प्रदान करना है, और यहां तक कि दूसरों की सफलता का आनंद लेना है। और हम ऐसा तभी कर सकते हैं जब हमारे पास आत्म-मूल्य हो।

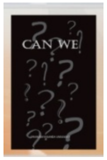
- **जप (Japa)**



जप ध्यान के दौरान एक शब्द या छोटे वाक्य की पुनरावृत्ति है। अक्षर ज उसके लिए है जो जन्म और मृत्यु के चक्र को समाप्त करता है और अक्षर पा उसके लिए खड़ा है जो सभी अशुद्धियों और बाधाओं को दूर या नष्ट कर देता है। इसलिए, जप मुक्ति, मोक्ष के लिए एक अप्रत्यक्ष साधन है। ज्ञान के लिए बाधाओं की विविधता को नष्ट करके, जप मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करता है। जप, तो, एक मात्र अनुशासन या तकनीक से अधिक है।

ये दो वार्ता एक व्यक्ति को जप की प्रकृति और तर्क और उसके काम करने के तरीके की समझ देगी। इस समझ के साथ व्यक्ति जप को दृढ़ विश्वास के साथ करने और इसे ठीक से संभालने में सक्षम होगा।

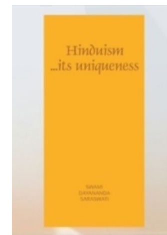
- **क्या हम कर सकते हैं? (Can We?)**



इस छोटी सी पुस्तिका में पाँच लेख हैं जिन्हें स्वामी जी ने 60 के दशक के आरम्भ में तपोवन प्रसाद पत्रिका के संपादन के समय लिखा था। स्वामी जी के अनुसार जो लोग उनकी बातों और किताबों के शिक्षण से परिचित हैं, वे इस पुस्तिका को पढ़ने का आनन्द लेंगे जैसा।।

- **हिन्दू धर्म—इसकी विशिष्टता (HINDUISM—ITS UNIQUENESS)**

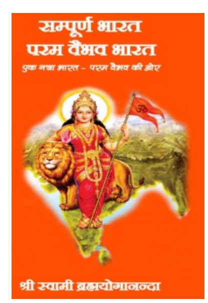
आज दुनिया में कई धर्म हैं जिनके कई अनुयायी हैं; धर्म जो पहले नहीं थे। ऐसे भी धर्म हैं जो पहले मौजूद थे लेकिन अब विलुप्त हो गए हैं। स्थापित धर्मों का एक इतिहास है। वे व्यक्तियों द्वारा शुरू किए गए थे और पहले उनका कोई अस्तित्व नहीं था। ये धर्म दुनिया के विभिन्न हिस्सों में कुछ जातीय धर्मों के विलुप्त होने का कारण बने। कुछ धर्म दूसरों को परेशान किए बिना अस्तित्व में नहीं आए। वे अन्य धर्मों को नष्ट करते हुए उभरे और दुनिया के उन हिस्सों के लिए जातीय विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं पर हावी होकर अस्तित्व में रहे।



यूरोप में 'नृजातीय धर्मों की विश्व कांग्रेस' नामक एक नया संगठन है। उनमें से कुछ लोग जो यूरोप में अपनी परंपराओं का पालन कर रहे थे, बच गए हैं। ये बहुत ही नगण्य संख्या में लोग हैं। फिर भी वे नए धर्मों के हमले से बचे रहे और एक संगठन बनाने के लिए साथ आए। हाल ही में मैंने इस संस्था के सचिव का हिंदू भाइयों को संबोधित एक पत्र इंटरनेट पर देखा, जिसमें लिखा था, 'आप इस दुनिया में सबसे बड़े जातीय धर्म हैं और आपके पास देने के लिए बहुत कुछ है, इसलिए हमें नेतृत्व दें।' यह इस संगठन के सचिव की ओर से अपील है। मैं उस समय की कल्पना नहीं कर सकता जब हम जिसे हिंदू धर्म कहते हैं वह अस्तित्वहीन था और मैं किसी एक व्यक्ति विशेष को हिंदू धर्म के लिए और आज जो कुछ भी है उसके लिए जिम्मेदार नहीं देखता। कृष्ण को हिंदू धर्म नहीं मिला । राम को हिन्दू धर्म नहीं मिला। हम राम को इसी परंपरा में पैदा हुए रूप में देखते हैं। उन्हें राम नाम दिया गया था और जब उनका जन्म जातष्टि के रूप में हुआ था, तो एक विशेष अनुष्ठान किया गया था। उनका जन्म एक वैदिक अनुष्ठान, पुत्रकामेष्टि से हुआ था और इसी परंपरा में और इसी वजह से उनका जन्म हुआ था। शास्त्रों में, वेदों में कही गई बातों को उन्होंने अपने जीवन के माध्यम से, प्रदान किए गए सत्य को दिखाकर और पुष्टि करके पुष्टि की। कृष्ण ने ऐसा ही किया।

- **सम्पूर्ण भारत परम वैभव भारत**

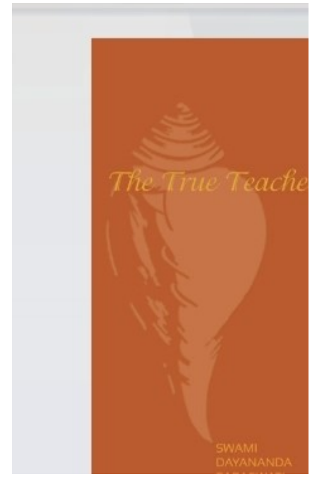
ब्रह्मदेव से महाराज परिक्षित तक भारत की इतिहास का एक सक्षेप इस ग्रन्थ में प्रस्तुत है। महाराज परिक्षित से यूनानि के आक्रमण से प्रारंभित आक्रमणकारियों के आगमन तक भारत जो था उस स्वर्ण मय था, उस स्वर्ण मय इतिहास उल्लेख है।



1857 के स्वतंत्रता का युद्ध में पहली बार हम सब ने एकता के साथ अंग्रेजों का विरोध किया। तब आज का भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, आजाद कश्मीर, कैलाश, नेपाल, भूटान, तिब्बत, श्रीलंका, ब्रह्मदेश(म्यांमार और बर्मा) सब एक अखंड भारत था। यह पुनः 2157 महापूर्ण कुम्भमेला में अखण्ड हो जाएगा। यह संकल्प है।

आगामी बारह कुम्भमेला के कालगति पर आधारित 12*12 यानी 144 वर्ष में हिन्दू कलाचार, हिन्दू सनातन धर्म, हिन्दू रीति-रिवाज प्रकट होगा, भारत अखण्ड होगा, भारत परम वैभवशाली होगा।

5.1.2 अन्य पुस्तकें

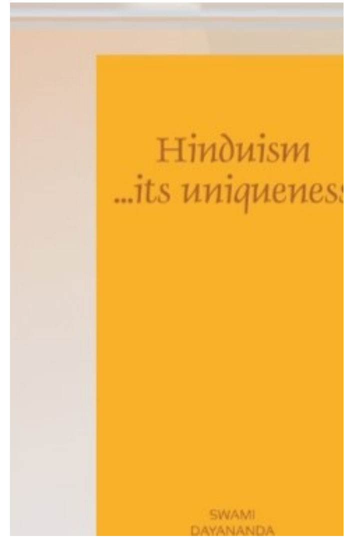


- Conversion Is Violence
- Do all Religions have the same goal?
- Moments with Krishna
- **The True Teacher**
- Purnamadah Purnamidam
- Dialogues With Swami Dayananda
- Discourses on Important Topics
- Action and Reaction
- Exploring Vedanta (Shraddha- Bhakti-dhyana-yogad avaihi & Atmanam ced vijaniyat)
- Freedom
- Freedom from Fear
- Freedom from Sadness
- Freedom from Stress
- Freedom in Relationship
- Friendship (The Essence of Vedic Marriage)
- Fundamental Problem.
- In the Vision of Vedanta
- Insights
- Introduction to Vedanta – Understanding The Fundamental Problem
- Teaching of the Bhagavad Gita.
- Vision of Gita
- Kenopanishad
- Mundakopanishad – (2 Vol. Set)
- Taittiriya Upanishad (2volume set)
- Mandukya Upanishad (4volume set)
- Knowledge and Action – The Two Fold Commitment
- Living Versus Getting On
- Mahavakya Vichara
- Morning Meditation Prayers
- What ‘s Meditation?
- Living Intelligently
- Successful Living
- Discovering Love
- Value of Values
- Need for Cognitive Change
- Vedic View and Way of Life
- Need for Personal Reorganisation
- Personal Re-engineering in Management
- Personnel Management
- Prayer Guide
- Problem Is You, The Solution Is You.
- Purpose of Prayer
- Sadhana and the Sadhya
- Sadhana Pancakam





- Satyam and Mithya
- Self-Knowledge
- Sri Rudram
- Sri Dakshinamurt Stotram
- Drk-Drsya-viveka
- Vivekachudamani(Talks on 108 Selected Verses)
- Vishnusahasranama (with translation and commentary)
- Tattvabodha
- Surrender and Freedom
- Talks and Essays (Vol.I)
- Talks and Essays (Vol.II)
- Talks and Essays (Vol. III)
- Talks on "Who Am I ?"
- Talks on Meditation
- Teaching Tradition of Advaita Vedanta
- Understanding Between Parents and Children
- Vedanta 24 x 7
- Wedding Ceremony Based on Hindu Concepts
- What You Love Is The Pleased Self
- Yoga of Objectivity
- You Are the Whole
- Bhagavad Gita Home Study (considered his magnum opus, running into 3,000 pages, now in its 4th edition), also available in Kannada, Marathi and Tamil
- Teacher of Teachers – Biography by Smt. Padma Narasimhan
- Contributions and writings – Biography by Smt. Sheela Balaji



5.2 शैक्षिक विचार

5.2.1 शिक्षक

एक स्कूल में, छात्र वास्तव में बोलते हुए स्कूल की संस्था नहीं बनाते हैं। शिक्षक ही संस्था का निर्माण करते हैं। कभी कोई विद्यार्थीकुल नहीं था लेकिन हमेशा एक गुरुकुल था। शिक्षकों की क्षमता एक छात्र की ओर से सीखने की प्रक्रिया में अंतर लाती है। मुझे हमेशा कुछ चीजें मिलती हैं जो एक व्यक्ति को एक अच्छा शिक्षक बनाती हैं। मैं, स्वयं एक प्रशिक्षित शिक्षक नहीं हूँ और कभी भी शिक्षक-प्रशिक्षण विद्यालय में नहीं गया हूँ। वेदांत शिक्षण के लिए ऐसा कोई विद्यालय नहीं है, फिर भी मैं एक शिक्षक हूँ। शिक्षण के माध्यम से मैं स्वयं को एक शिक्षक के रूप में देखता हूँ और इस प्रक्रिया में मैं कुछ शिक्षकों को बनाने के लिए भी जिम्मेदार हूँ।

5.2.2 पेशा

मैं शिक्षण को पेशा नहीं मानता। मैं अक्सर सुनता हूं कि पेशे में शिक्षक का पेशा सबसे अच्छा है। यदि आप शिक्षक और पेशेवर हैं तो आपके पास एक ग्राहक होना चाहिए। एक शिक्षक के ग्राहक निश्चित रूप से छात्र ही होंगे लेकिन अब आप उन्हें छात्र नहीं कह सकते। वे मुवक्किल हैं यद्यपि आप यह नहीं कह सकते, 'मेरी कक्षा में मेरे चालीस मुवक्किल हैं। यहां तक कि अगर आप ट्यूटोरियल कक्षाओं जैसी कक्षाएं दे रहे हैं, तो आप उन्हें अपने ग्राहकों के रूप में नहीं बुला सकते हैं जो आपसे

सबक लेते हैं और आपकी मदद करते हैं। न तो पेशेवर शिक्षक हैं और न ही पेशेवर छात्र। एक शिक्षक-छात्र संबंध एक निश्चित स्वीकृति से पैदा होता है। आप एक भूमिका स्वीकार करते हैं और एक शिक्षक बन जाते हैं।

5.2.3 गुरु-शिष्य

मैं केवल छात्रों का गुरु हूं अगर कोई कहता है, 'तुम मेरे शिक्षक हो' तो मैं उसके लिए एक शिक्षक हूं। तब तक मैं नहीं हूं। मैं गुरु हूँ यदि आप मेरे शिष्य हैं, छात्र हैं। वन में वनवास की अवधि के दौरान, कृष्ण कई वर्षों तक और कई अवसरों पर अर्जुन के साथ रहे, फिर भी अर्जुन ने कभी भी कृष्ण को अपना गुरु नहीं कहा और न ही उन्होंने खुद को शिष्य के रूप में संबोधित किया। वह शायद कृष्ण को एक मित्र, दार्शनिक और मार्गदर्शक के रूप में देखता था। युद्ध के मैदान में जब वह अपने ही लोगों को मारने के बारे में नहीं सोच सका, तो अर्जुन ने खुद को एक शिष्य में बदल लिया और अपना रवैया बदल दिया। शिष्य का अर्थ है जो योग्य है, कम से कम अपने अनुसार शिष्य होने के योग्य है। वह मानता है कि वह पढ़ाने के योग्य है और उसने इसे अर्जित किया है इसलिए वह खुद को शिष्य कहता है।

एक शिक्षक और एक छात्र के बीच एक रिश्ता होता है और यह एक पसंद का रिश्ता होता है। एक व्यक्ति एक निश्चित समय पर एक शिक्षक की भूमिका निभाने का चुनाव करता है। उन दिनों जब कोई शिक्षक बन जाता था, तो वह घोषणा करता था कि वह एक गुरुकुलम चला रहा है। इसके बाद अलग-अलग जगहों से छात्र आएंगे। आजकल आपके पास कक्षाओं के साथ एक स्कूल है और शिक्षक रहते हुए छात्र शामिल होते हैं और चले जाते हैं। इसी तरह की व्यवस्था प्राचीन गुरुकुलम में भी मौजूद थी। छात्र आए, लंबे समय तक अध्ययन किया और चले गए। फिर छात्रों का एक और जत्था आया। यह हमेशा ऐसा ही था; शिक्षक छात्रों को आगे बढ़ने में मदद करते रहे। इस प्रणाली में चुनाव आपका है। आपने एक शिक्षक बनना चुना है जिसका अर्थ है कि आपने एक बच्चे के जीवन में एक शिक्षक की भूमिका निभाने का चुनाव किया है।

5.2.4 प्रतिबद्धता

कोई भी शिक्षक अपने आप में शिक्षक नहीं होता है। एक शिक्षक वह व्यक्ति होता है जिसके पास पढ़ाने की एक निश्चित क्षमता या प्रशिक्षण होता है। प्रशिक्षण अपने आप में आपको पढ़ाने के कौशल का आश्वासन नहीं देता है और निश्चित रूप से ऐसा दिल नहीं ला सकता है जो सिखाने के लिए प्यार करता हो। ऐसे कई प्रशिक्षित लोग हैं जिनके पास पढ़ाने के लिए दिल, कौशल या स्वभाव नहीं है। छात्रों को पढ़ाने के लिए उनके पास वह प्रतिबद्धता नहीं है। एक शिक्षक भी एक निश्चित प्रतिबद्धता से ही शिक्षक बन जाता है।

5.2.5 भूमिका

एक बार जब आप एक शिक्षक की भूमिका ग्रहण कर लेते हैं, तो आपको वह भूमिका निभानी होती है। क्योंकि एक छात्र से असंबद्ध, आप शिक्षक नहीं हो सकते। संस्था से जुड़े हुए भी आप शिक्षक नहीं हैं। अकेले छात्र से जुड़े आप एक शिक्षक हैं, जो बहुत ही पवित्र भूमिका निभा रहे हैं। बच्चा आपको अपने शिक्षक के रूप में देखता है। आप कह सकते हैं, 'नहीं! ये बच्चे मेरी ओर नहीं देखते। वे छत की ओर देखते हैं। वे केवल मेरी आलोचना करते हैं।' हो सकता है यह सब सच हो। फिर भी वे आपकी ओर भी देखने वाले हैं। जब एक शिक्षक पढ़ाता है तो एक छात्र को छत की ओर क्यों देखना चाहिए जब तक कि उसका शिक्षण उबाऊ न हो? कुछ छात्रों को पृष्ठभूमि की समस्याओं सहित कुछ समस्याएँ भी हो सकती हैं। ऐसा नहीं है कि शिक्षक हमेशा अक्षम होता है; कभी-कभी गलती छात्रों की होती है, हालांकि हर छात्र वास्तव में सीखना चाहता है।

5.2.6 दृष्टिकोण

यह कभी नहीं कहते कि बच्चा सीखने में अक्षम है। बच्चे के दिमाग पर कोई वास्तविक आरोपण नहीं होता है जिसे अन्यथा ज्ञान संरचना के रूप में जाना जाता है। आप ज्ञान की अधिरचना को ज्ञान की पटियाओं पर आरोपित नहीं करते हैं। आप वास्तव में ज्ञान की रचना नहीं कर रहे हैं बल्कि केवल अज्ञान को दूर कर रहे हैं। एक शिक्षक जानता है, 'मैं ज्ञान पैदा नहीं कर रहा हूँ। मैं केवल अज्ञान को दूर करने की कोशिश कर रहा हूं।'

5.2.7 नियंत्रण

शिक्षण एक रचनात्मक साहसिक कार्य है। यदि विद्यार्थी को कुछ समझने में कठिनाई होती है और आपका यह दृष्टिकोण है कि, 'मैं एक शिक्षक की भूमिका निभा रहा हूँ। मैं छात्र के लिए प्रतिबद्ध हूं, 'फिर कोई अन्य विचार बीच में नहीं आता है। यह पैसे के लिए नहीं है। यह सत्ता के लिए नहीं है। यह नियंत्रण के लिए नहीं है।

5.2.8 उत्तरदायित्व

उत्तरदायित्व एक प्राधिकरण द्वारा लिखा जा सकता है, 'ये आपकी जिम्मेदारियां हैं। यह आपको आवंटित कार्य है और आपको उस जिम्मेदारी का ध्यान रखना चाहिए। दूसरी ओर, एक शिक्षक के लिए इस प्रकार की जिम्मेदारी नहीं होती है। एक प्रतिबद्धता है। जब आप खुद को ऐसी स्थिति में पाते हैं जहां आपको एक शिक्षक के रूप में देखा जाता है या आपने एक शिक्षक की भूमिका अपना ली है तो यह बहुत स्पष्ट है कि आपकी भूमिका क्या है। जहां भी भूमिका है, एक स्क्रिप्ट होगी और इस उदाहरण में स्क्रिप्ट बहुत स्पष्ट है। विद्यार्थी सामने है और आपको विद्यार्थी को दिखाना है। एक बच्चे की आँखों में आप जो चमक देखते हैं, जब वह आपके द्वारा कही गई किसी बात को स्पष्ट रूप से समझ लेता है, वही आपको भुगतान प्राप्त होता है। इस प्रकार आप पाते हैं कि शिक्षण ही प्रतिफल है।

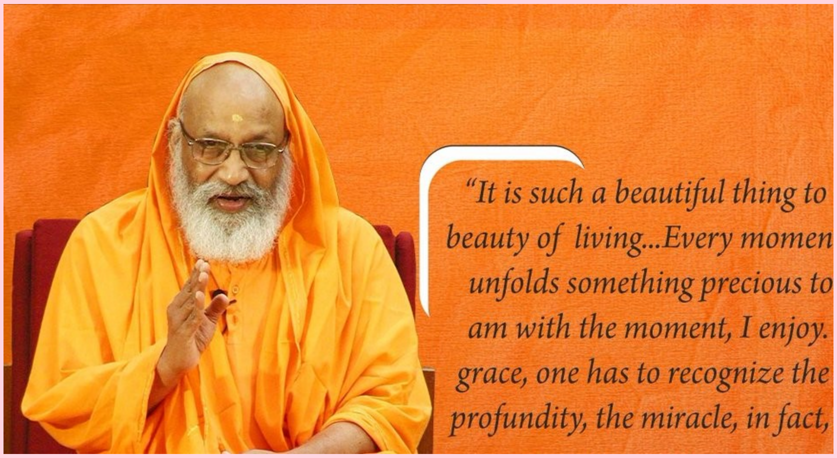
एक शिक्षक हमेशा एक शिक्षक के रूप में चमकता है। बाद में आप अपने कुछ पुराने छात्रों से मिल सकते हैं। वे पूरी दुनिया में हैं, उनमें से कुछ मैक्सिको में हैं और अन्य न्यू मैक्सिको में लेकिन जब आप उन सभी से कहीं मिलते हैं और देखते हैं कि वे आपको कैसे देखते हैं या वे आपके बारे में क्या सोचते हैं, तो एक निश्चित संतुष्टि होती है। उनके हिस्से में एक प्यार, एक खास तरह का सम्मान और स्नेह होता है और यही वह सब कुछ होता है जिसकी आपको जरूरत होती है।

5.2.9 कर्तव्य/जवाबदेही

आपके द्वारा पढ़ाए जाने वाले विषय के बारे में आपका ज्ञान संपूर्ण होना चाहिए। आप किसी विषय से अनभिज्ञ होकर उसे पढ़ा नहीं सकते, यह उचित नहीं है। छात्र एक ऐसे शिक्षक को सुनना पसंद करते हैं जो स्पष्ट हो और जिसके लिए हर छात्र एक जैसा हो। आप एक शिक्षक की भूमिका निभाते हैं और अपना काम बखूबी करते हैं। वास्तव में यह नौकरी नहीं है, यह एक आनंद है। शिक्षक एक शिक्षण संस्थान है।

अध्याय षष्ठ

निष्कर्ष एवम् सुझाव



अध्याय षष्ठ

निष्कर्ष एवम् सुझाव

6.1 निष्कर्ष

शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध "स्वामी दयानन्द सरस्वती का शैक्षिक योगदान" के निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किए गए हैं—

6.1.1 जीवन परिचय सम्बन्धी

स्वामी जी के जीवन परिचय सम्बन्धी निष्कर्ष इस प्रकार हैं—

- स्वामी जी का जन्म तमिलनाडु के तिरुवरुर जिले के मञ्जक्कुडि ग्राम में 15 अगस्त 1930 को हुआ था।
- इनके बचपन का नाम नटराजन था।
- नटराजन चतुर, साहसी और नटखट नन्हें बालक थे वो हमेशा साझा करने और जो कुछ भी उनके पास होता, उसे वितरित कर देने के इच्छुक रहते थे।
- नटराजन ने मैट्रिक्युलेशन तक अध्ययन किया अर्थात ग्यारह वर्षों तक विद्यालयीन शिक्षा प्राप्त की।
- विद्यालय में ही भगवद्गीता और संस्कृत से उनका परिचय कराया जा चुका था। वे नित्य गायत्री जप करते और प्रत्येक शुक्रवार सरस्वती पूजा करते थे।
- स्वामी जी ने पहली नौकरी चेन्नई से अंग्रेजी और तमिल में छपने वाले साप्ताहिक समाचारपत्र धार्मिक हिन्दू में की।
- स्वामी जी एक सैनिक के रूप में वायुसेना में भी भर्ती हुए।
- स्वामी जी ने चिन्मय मिशन की पत्रिका त्यागी के सम्पादक के रूप में कार्य किया।
- सम्पादक के रूप कार्य करते हुए स्वामी जी ने आध्यात्मिक विषयों पर चिंतन-मनन किया।
- स्वामी प्रणवानन्द के मार्गदर्शन में नटराजन की वेदांत दृष्टि जाग्रत हुई।
- नटराजन की स्वामी चिन्मयानन्दजी में इतनी श्रद्धा थी कि वे कोई पूर्व संकेत दिए बिना भी उन्हे सन्यास दे सकते थे, 4 मार्च 1962 को शिवरात्रि के पवित्र दिवस पर नटराजन स्वामी दयानंद सरस्वती हो गये।
- स्वामी दयानंद सरस्वती साधु जीवन के अभ्यस्त होने उत्तरकाशी और गंगोत्री गये।
- वर्ष 1963 में स्वामी जी चिन्मय मिशन की पत्रिका तपोवन प्रसाद के संपादक बना दिये गये।
- स्वामी जी का वर्ष 1964 से 1967 तक ऋषिकेश में व्यतीत हुआ।
- ऋषिकेश में स्वामी जी पुरानी झाड़ी क्षेत्र में रहे।
- वर्ष 1982 में आश्रम का विस्तार हुआ और इसका नामकरण अर्श विद्या पीठम् हुआ।

- स्वामी जी ने विविध क्षेत्रों जैसे वेदान्त शिक्षण, समाजसेवा, कर्नाटक संगीत, हिन्दू समुदाय का नेतृत्व और अंतर्राष्ट्रीय पटल पर हिंदुत्व को मुखरित कर विश्व इतिहास पर अपनी अमिट छाप छोड़ी।
- स्वामी जी 23 सितम्बर 2015 को ऋषिकेश में महासमाधी ली।
- ऋषिकेश आश्रम में उनकी महासमाधी के उपरांत अधिष्ठानम् नाम से यहाँ उनके स्मारक का निर्माण किया गया है।

6.1.2 कृतित्व सम्बन्धी

- वर्ष 1967 से 1972 तक, स्वामी जी ने सम्पूर्ण भारतवर्ष में गीता ज्ञान यज्ञों का सञ्चालन किया।
- सेलर्सबर्ग गुरुकुलम् (USA) पर सञ्चालित हुए दीर्घकालीन वेदांत शिक्षण कार्यक्रमों के अंतर्गत, स्वामी जी ने गीता पर व्याख्यान दिए। इन समस्त व्याख्यानों को भगवद्गीता गृह अध्ययन माला के रूप में लिपिबद्ध किया गया है।
- वर्ष 1999 में, स्वामी जी ने धर्म रक्षण समिति की स्थापना की।
- वर्ष 2000 में, स्वामी जी ने चेन्नई में हिन्दू धर्म आचार्य सभा का संयोजन किया।
- स्वामी जी रचना "भो शम्भो" शास्त्रीय संगीत समुदाय में अत्यंत लोकप्रिय है।
- स्वामी जी ने तमिलनाडु, केरल, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक आदि राज्यों में वेद पाठशालाओं की स्थापना की।
- स्वामी जी ने वर्ष 1979 में सांदीपनि पश्चिम्, पिअर्सी (कैलिफोर्निया, अमेरिका) पर दीर्घकालीन वेदांत शिक्षण कार्यक्रम का सञ्चालन किया।
- पिअर्सी कार्यक्रम के समापन के पश्चात् वर्ष 1982 में, स्वामी जी बिना किसी संस्थागत् संलिप्तता के स्वतंत्र रूप से यात्राएँ और जन सभाएँ करते रहे।
- वर्ष 2000 में, स्वामी जी ने संयुक्त राष्ट्र में विश्व शांति शताब्दी शिखरवार्ता को सम्बोधित किया।

6.1.2 शैक्षणिक संस्थान एवम् शैक्षिक योगदान सम्बन्धी

- स्वामी जी ने AIM for SEVA की स्थापना की जिसके अन्तर्गत 94 छात्रालयम तथा 4 विद्यालय वर्तमान में सञ्चालित हैं।
- AIM for SEVA द्वारा सञ्चालित विद्यालय निम्नलिखित हैं—
    - Swami Dayananda Rotary Matriculation Higher Secondary (Kadalur village, Chengalpet district, Tamil Nadu)
    - School Swami Dayananda Vidyasramam Nursery & Primary School (Karagur village, Dharmapuri district, Tamil Nadu)
    - Swami Dayananda Saraswati Vidyalaya (Padali Khurd village, Khargone district, Madhya Pradesh)

  - The Inder & Prabha Sharma Girls School (Khategaon, Dewas district, Madhya Pradesh)
- स्वामी जी द्वारा स्थापित अन्य संस्थान निम्न हैं—
  - स्वामी दयानंद जयवर्तनवेलु आयुर्वेदालय, आनैक्कट्टि, कोयम्बटूर
  - अर्श विद्या अनुसन्धान एवं प्रकाशन ट्रस्ट, चेन्नई
  - अर्श विज्ञान गुरुकुलम्, नागपुर
  - स्वामी दयानंद शैक्षणिक ट्रस्ट, मञ्जक्कुडि
  - अर्श विद्या गुरुकुलम्, आनैक्कट्टि, कोयम्बटूर
  - सेलर्सबर्ग गुरूकुलम, सेलर्सबर्ग, पेन्सिलवेनिया (अमेरिका)
  - निःशुल्क ई-पुस्तकों हेतु वेबसाइट **www.arshaavinash.in**

6.1.3 शैक्षिक विचार सम्बन्धी

- विद्यार्थी वास्तव में बोलते हुए विद्यालय का निर्माण नहीं करते बल्कि शिक्षक विद्यालय का निर्माण करते हैं।
- शिक्षण पेशा नहीं है।
- गुरु तभी गुरु है जब किसी शिष्य ने गुरु के रूप में स्वीकार किया हो।
- शिक्षक को अपने कार्य के प्रति प्रतिबद्ध होना चाहिए।
- शिक्षक को अपनी भूमिका का निर्वहन ईमानदारी से करना चाहिए।
- शिक्षक को अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन करना चाहिए।
- शिक्षक को अपना कार्य कर्तव्य समझ कर करना चाहिए।

6.2 शैक्षिक निहितार्थ

- बचपन से ही यदि कोई बालक चतुर और नटखट है तो इसे सकारात्मक रूप में लेना चाहिए क्यों कि ऐसे बालकों में मानसिक विकास की सम्भावनाएं अपार होती है।
- वर्तमान विद्यालयी शिक्षा में उच्चारण सम्बन्धी त्रुटियाँ होती रहती हैं इसके लिए संस्कृत भाषा का अध्ययन अनिवार्य रूप से होना चाहिए।
- भगवद्गीता एवं अन्य धार्मिक ग्रन्थों का परिचय विद्यालयी शिक्षा में होना चाहिए इससे विद्यार्थी अपने धर्म व संस्कृति के बारे जागृत रहेंगे।
- मनुष्य को आध्यात्मिक चिन्तन पर भी जोर देना चाहिए क्योंकि अध्यात्मिक चिन्तन से मानसिक एकाग्रता होती है।

- स्वामी जी द्वारा स्थापित शिक्षण संस्थान आधुनिक शिक्षा के साथ- साथ मूल्य शिक्षा पर भी जोर दे रहे हैं ऐसे ही संस्थानों का निर्माण पूरे भारत वर्ष में किया जाना चाहिए जिससे इन संस्थाओं का अधिक से अधिक प्रचार हो सके।
- किसी भी विद्यालय के निर्माण में विद्यालय भवन महत्वपूर्ण नहीं है, महत्वपूर्ण है वहाँ के शिक्षक। वर्तमान में ऊँची-ऊँची इमारतें बनाकर विद्यालय को बहुत अलग ढंग से पेश किया जाता है। विद्यालय को शिक्षा का केंद्र न बनाकर अन्य चीजों पर केंद्रित किया जा रहा है जबकि प्राचीन व्यवस्था ऐसी नहीं थी। पहले गुरुकुल होते थे जो गुरु की गुणवत्ता पर केंद्रित थे। भवन हो न हो गुरु होते थे जो अपने शिष्यों का सर्वांगीण विकास करते थे उन्हें सामाजिक क्रियाकलापों से परिचित कराते थे। प्रशासन को चाहिए कि वो शिक्षकों की गुणवत्ता पर ध्यान दें। जिससे शिक्षक विद्यालय को ज्ञान का वास्तविक केंद्र के रूप में स्थापित कर सकें।
- शिक्षण पेशा नहीं है यदि शिक्षण पेशा होगा तो शिक्षक पेशेवर तथा छात्र उनके ग्राहक होंगे जो शिक्षण तो नहीं हो सकता है। आजकल बहुत से शिक्षक हैं जो विद्यालय में ध्यान से नहीं पढ़ाते अपितु विद्यालय के बाहर अपना निजी ट्यूशन या कोचिंग पर आने का विद्यार्थियों पर दबाव डालते हैं दूसरे शब्दों में उन्होंने शिक्षण को व्यवसाय का रूप दे दिया है अर्थात उन्होंने ईमानदारी/ लगन/ पूर्णरूपेण नहीं पढ़ाया है, जो अनुचित है। शिक्षण निःस्वार्थ होना चाहिए यदि आपको व्यवसाय ही करना है तो अन्य पेशा चुना जा सकता है लेकिन यदि आप शिक्षक हैं तो आपका पूरा ध्यान से शिक्षण पर ही होना चाहिए ना कि पेशा पर।
- केवल शिक्षक की नौकरी पाने या शिक्षक प्रशिक्षण कर लेने मात्र से कोई शिक्षक सही अर्थों में शिक्षक नहीं बन जाता वह शिक्षक कहलाने का तब तक अधिकारी नहीं है जब तक कि अपने कार्य के प्रति प्रतिबद्ध नहीं हैं। आजकल जिसका सर्वत्र अभाव देखा जाता है सरकारी विद्यालयों में निरीक्षण के समय अनेक शिक्षक अनुपस्थित मिलते हैं, परिषदीय विद्यालयों के विद्यार्थी अपनी पाठ्य पुस्तक नहीं पढ़ पा रहे हैं उन्हें जोड़ घटाना गुणा भाग नहीं आता है, वह देश के प्रधानमंत्री राष्ट्रपति का नाम नहीं जानते हैं शिक्षक नौकरी के साथ साथ ट्यूशन पढ़ा रहे हैं इत्यादि उदाहरण प्रतिबद्धता की कमी का ही परिणाम है जो शिक्षक अपने कार्य के प्रति प्रतिबद्ध नहीं हैं वास्तव में शिक्षक नहीं हैं शिक्षक के नाम को बदनाम कर रहे हैं शिक्षक के नाम पर कलंक है। अतः शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणार्थियों के अंदर प्रतिबद्धता के गुणों का विकास किया जाना चाहिए इसे पाठ्यक्रम का अंग बनाया जाना चाहिए शिक्षकों के चयन में विषय वस्तु के ज्ञान के साथ प्रतिबद्धता का गुण चयन का प्रमुख मापदंड बनाया जाना चाहिए।

6.3 शैक्षिक उपादेयता

किसी भी सोद्देश्य कार्य के शैक्षिक निहितार्थ अवश्य होते हैं। उस कार्य की सार्थकता उसके शैक्षिक निहितार्थ में होती है। अर्थात किसी भी शैक्षिक उद्देश्य का महत्व तभी निर्धारित होता है, जब उसकी शैक्षिक परिवेश में उपयोगिता स्थापित की जा सके। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध की शैक्षिक उपादेयता निम्नवत रूप में वर्णित हैं—

6.3.1 विद्यार्थियों के लिए

प्रस्तुत शोध कार्य विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा। प्रस्तुत शोध के निष्कर्षों एवं सुझावों के आधार पर विद्यार्थी प्रेरणा प्राप्त कर अपने जीवन को एक नई दिशा दे सकेंगे एवं शिक्षा के सही अर्थ को जानकार शैक्षिक जीवन में एक नूतन परिवर्तन कर सकेंगे। वे शिक्षा को केवल नौकरी का साधन न मानकर शिक्षा के सम्यक अर्थ को अपने जीवन में उतारकर इन्द्रियों व मन को नियन्त्रित कर संयमित जीवन जीना सीख सकेंगे और अपने जीवन के स्वर्ण युग को संस्कारित कर उसका उपयोग ज्ञानार्जन में कर सकेंगे।

6.3.2 शिक्षकों के लिए

स्वामी जी के शैक्षिक विचारों की अवधारणा से प्रभावित होकर शिक्षक अपने शैक्षिक कार्य के वास्तविक उद्देश्य को जान सकेंगे और एक आदर्श शिक्षक के रूप में स्वयं को प्रतिस्थापित करने में सफलहो सकेंगे। वे आधुनिकता व दिखावे से दूर अपने आन्तरिक एवं बाह्य जगत का परिष्कार करके अनुशासित व आदर्श शिक्षक के गुणों को अपने व्यावहारिक जीवन में ढाल सकेंगे तथा शिक्षा को केवल धनार्जन का साधन न मानकर ज्ञान दान की एक पवित्र प्रक्रिया बनाकर शिक्षा के क्षेत्र में एक नया बिगुल बजा सकेंगे और शिक्षा के गिरते स्तर को ऊँचा उठा सकेंगे।

6.3.3 अभिभावकों के लिए

भौतिक संसाधनों के इस युग में अभिभावक बच्चों को पढ़ाते ही इसलिए हैं कि वह केवल धन माने की दौड़ में लग जाये। आज अभिभावकों ने शिक्षा को धनार्जन के आधार तक सीमित रखा है, किन्तु स्वामी जी के शैक्षिक विचारों से प्रेरित होकर अभिभावक शिक्षा को संस्कारों से समन्वित करते हुए रिश्तों के प्रति संवेदनशून्य होते बालकों को मानवता की शिक्षा के लिए प्रेरित कर देश को एक श्रेष्ठ नागरिक प्रदान कर सकेंगे।

6.3.4 जन सामान्य के लिए

स्वामी जी के जीवन एवं विचारों से प्रेरणा प्राप्त कर जन सामान्य अपना जीवन आनन्दमय बना सकेंगे। वे तनावमुक्त होकर योगमय जीवन जीने के लिए अभिप्रेरित होंगे तथा धर्म, संस्कृति एवं राष्ट्रीय प्रेम से अनुप्राणित होकर अपने कर्तव्य पथ पर अग्रसर हो सकेंगे। उनमें सद्प्रवृत्तियों को अपनाने की प्रेरणा का संचार होगा और निश्चय ही समाज में व्याप्त बुराइयों के विरुद्ध डटकर खड़े होकर अच्छाई के वाहक बन सकेंगे।

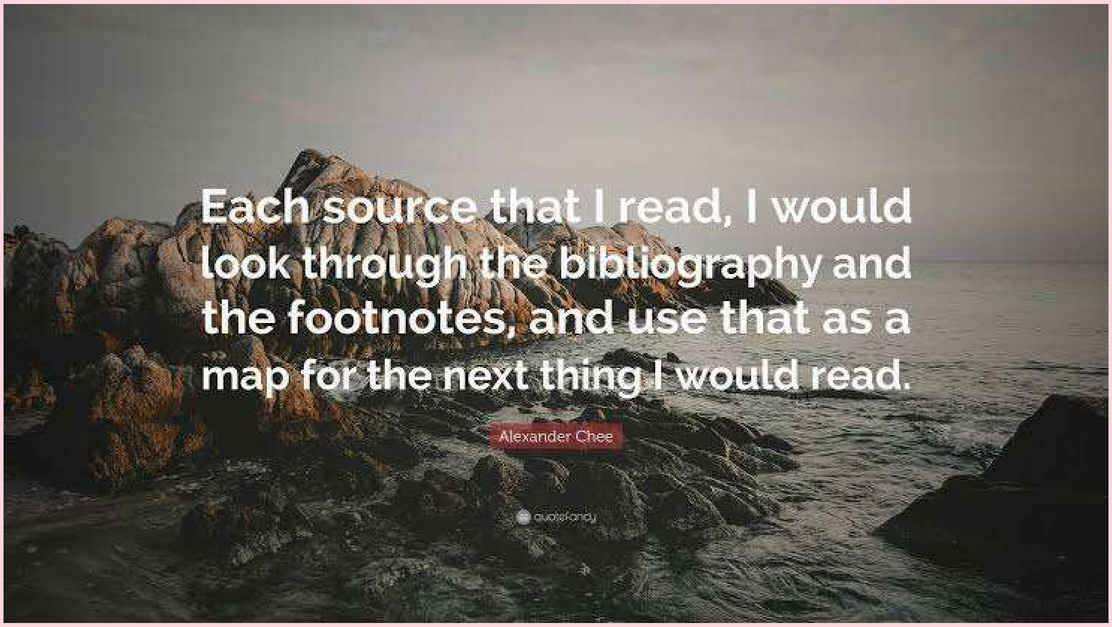
6.4 भावी शोध हेतु सुझाव

शोधकर्ता द्वारा पूर्ण किए गए लघु शोध-प्रबन्ध स्वामी दयानन्द सरस्वती का शैक्षिक योगदान का अध्ययन किया गया। अध्ययन के दौरान बहुत सी नवीन गतिविधियाँ सीखने को मिली जिन्हें शोधकर्ता आगामी शोधार्थियों हेतु सुझाव के रूप में प्रस्तुत करता है| ये आगामी शोध हेतु निम्नलिखित है—

- स्वामी दयानन्द सरस्वती की कृतियों में निहित सांस्कृतिक मूल्यों पर भावी शोध अध्ययन किया जा सकता है।
- स्वामी दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक योगदान का अन्य विद्वानों के शैक्षिक योगदान से तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

- स्वामी दयानन्द सरस्वती के सामाजिक एवं अन्य शैक्षिक गतिविधियों पर भी भावी शोध किया जा सकता है|
- स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित प्रमुख संस्थाओं पर भी भावी शोध किया जा सकता है|
- भावी शोध में भारत के प्रतिभावान सन्यासियों के शैक्षिक विचारों का अध्ययन किया जा सकता है।
- भावी शोध में अन्य विश्वविद्यालयों के प्रतिभावान शिक्षकों के शैक्षिक विचारों का अध्ययन किया जा सकता है।
- भावी शोध में राष्ट्रपति एवं राज्यपाल द्वारा पुरस्कृत संस्थाओं के शैक्षिक योगदान का अध्ययन किया जा सकता है।
- भावी शोध में स्वामी दयानन्द सरस्वती एवं अन्य शिक्षाविदों के विचारों तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- भावी शोध में स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित विद्यालयों का अन्य परिषदीय विद्यालयों से तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- स्वामी दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक योगदान के अतिरिक्त सामाजिक योगदान पर भावी शोध किया जा सकता है।
- भावी शोध में स्वामी दयानन्द सरस्वती के अन्य शैक्षिक प्रकल्पों का अध्ययन किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची



सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

आर्य, हेमन्त कुमार (2019)। *माननीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी की शैक्षिक विचारधारा का अध्ययन।* एम.एड. लघु शोध-प्रबन्ध, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी। https://archive.org/details/book_20200607

कुमार, अजय (2012)। *महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं टैगोर के रवीन्द्रनाथ शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन ।* पी-एच.डी. शोध-प्रबन्ध, वीर बहादुर सिंह पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर। http://hdl.handle.net/10603/182020

कुमार, धीरेन्द्र (2020)। *चिन्मय मिशन का शैक्षिक योगदान का अध्ययन।* एम.एड. लघु शोध-प्रबन्ध, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी। https://shorturl.at/uyzFL

गुप्ता, सत्येन्द्र (2005)। *बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती मन्दिर संस्थाओं के शैक्षिक योगदान का अध्ययन।*पी-एच.डी. शोध-प्रबन्ध, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी। http://hdl.handle.net/10603/13596

तिवारी, शोभा (2015)। *वर्तमान भारतीय परिवेश में रवीन्द्र नाथ टैगोर एवं महात्मा गाँधी जी के शैक्षिक योगदान का तुलनात्मक अध्ययन।* पी-एच.डी. शोध-प्रबन्ध, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ०प्र०)। http://hdl.handle.net/10603/225809

पाण्डेय, कल्पना (2005)।*जिद्दू कृष्ण मूर्ति के दार्शनिक चिन्तन के शैक्षिक निहितार्थ काआलोचनात्मक अध्ययन*। पी-एच.डी. शोध-प्रबन्ध, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी। http://hdl.handle.net/10603/11941

सिंघल, आरती (2006)।*आधुनिक भारतीय परिप्रेक्ष्य में श्रीमद्भागवत गीता का शैक्षिक निहितार्थ एवं उसकी प्रासंगिकता का एक आलोचनात्मक अध्ययन।* पी-एच.डी. शोध-प्रबन्ध, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी। http://hdl.handle.net/10603/10630

सिंह, राजू(2020)। *अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान का शैक्षिक योगदान का अध्ययन।* एम.एड. लघु शोध-प्रबन्ध, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।

सिंह, रेनु (2008)। *भारत में छत्रपति शाहूजी महाराज का शैक्षिक योगदान विशेष रुप से दलितों के*

*शैक्षिक उत्थान में।*पी-एच.डी. शोध-प्रबन्ध, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी। http://hdl.handle.net/10603/12262

त्रिपाठी, आशुतोष (2014)। *पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के अध्यात्मवाद का व्यावहारिक दृष्टिकोण से शिक्षा और समाज निर्माण में योगदान: एक समीक्षात्मक अध्ययन।* पी-एच.डी. शोध-प्रबन्ध, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी। http://hdl.handle.net/10603/225812

Swami Dayanand Sarswati—a biography in Hindi. (2023, Jul 15). Arshavinash. http://surl.li/mdgjy

AVPRT. (2014). *Teachings of Swami Dayananda* (Version3.5.7) [Mobile App] https://play.google.com/store/apps/details?id=com.avrpt.teachingsofswamidayananda

शशांक दुबे। (2023, मार्च 22)। *पीएम मोदी के आध्यात्मिक गुरु स्वामी दयानंद सरस्वती की कहानी, जिन्हें UN ने वर्ष 2005 में किया था सम्मानित!* Netdrick News. http://surl.li/mjlqs

(2015)। *पहली बार PM बनने के बाद ऋषिकेश जाएंगे मोदी, आश्रम में जानेंगे गुरु का हाल।* दैनिक भास्कर। http://surl.li/mjlrv

J.V. Siva prasanna kumar/M.R. Venkatesh. (2015, सितम्बर 25)। *स्वामी दयानंद सरस्वती के समय में हिंदू धर्म में पुनर्जागरण हुआ।* Deccan Chronical. http://surl.li/mjltq

(2014, November 17). *Non-violence should be practised to avoid conflicts: Swami Dayananda Saraswati.* The Hindu. http://surl.li/mjmhk

(2016, January 25). *PM Narendra Modi's Spiritual Guru Dayanand Saraswati Gets Padma Bhushan.* NDTV. http://surl.li/mjmij

(2015, October 05). *Homage paid to Swami Dayananda Saraswati.* The Hindu. http://surl.li/mjmkx

*Guidelines for Preparation of the Thesis/Dissertations (2018).*Nainital: Kumaun University. https://shorturl.at/amS23

How to Add Page Numbers in APA स्टाइल. (2020, February 25).Editarians. https://www.editarians.com/page-numbers-in-apa-style/

How to Cite a website in APA Style: Format & Examples. (2022, May 10). Scribbr.

https://www.scribbr.com/apa-examples/website/

Margins. (n.d.) APA Style. Retrieved June 10, 2022, from

https://apastyle.apa.org/style-grammar-guidelines/paper-format/margins

परिशिष्ट

I. Chatralayam: at a Glance

II. Educational Activities at Swami Dayananda Rotary Matriculation Higher Secondary School

III. Educational Activities at Swami Dayananda Vidyasramam Nursery & Primary School

IV. Educational Activities at Swami Dayananda Saraswati Vidyalaya

V. Educational Activities at Inder and Prabha Sharma Girls Senior Secondary School

VI. CurriculamVitae

परिशिष्ट I

Chatralayam: at a glance













परिशिष्ट II

Educational Activities at Swami Dayananda Rotary Matriculation Higher Secondary School

















परिशिष्ट III

Educational Activities at Swami Dayananda Vidyasramam Nursery & Primary School









परिशिष्ट IV

Educational Activities at Swami Dayananda Saraswati Vidyalaya

















परिशिष्ट V

Educational Activities at Inder and Prabha Sharma Girls Senior Secondary School

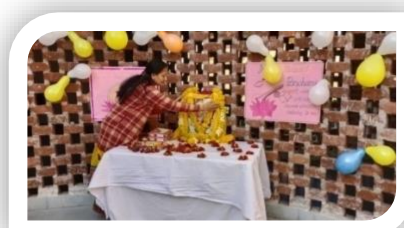
















Curriculum Vitae



Rajat Tripathi

CAREER OBJECTIVE

- Self-motivated and hardworking fresher seeking for an opportunity to work in a challenging environment to prove my skills and utilize my knowledge & intelligence in the growth of the organization.

CONTACT DETAILS

- Mobile No. 9575766257
- Email id rt812746@gmail.com

ADDRESS

- 326, Pahari Bujurg, Pahari Karwi Chitrakoot Uttar Pradesh 210206

ACADEMIC QUALIFICATION

Exam Name	Board / University	Passing year	Percentage of Marks	Division
High School	UP Board	2012	77	1
Intermediate	UP Board	2014	61.80	1
B.Sc.	MP Bhoj University	2018	67.43	1

PROFESSIONAL QUALIFICATION

Exam Name	Board / University	Passing year	Percentage of Marks	Division
B.Ed.	Dev Sanskriti Vishwavidyalaya, Haridwar	2021	76.7	1
M.Ed. (Appearing)	Bundelkhand University	2023	NIL	1
PG Diploma in Yogic Science	Dev Sanskriti Vishwavidyalaya Haridwar	2021	64.8	1

PERSONAL DETAILS

Date of Birth	05-02-1998
Father's Name	Heera lal
Mother's Name	Suneeta
Nationality	Indian
Marital Status	Unmarried
Language	Hindi And English
Hobbies	Reading Books and listening songs

Declaration:

I hereby declare that all the statement made in this resume are true, complete and correct to the Knowledge.

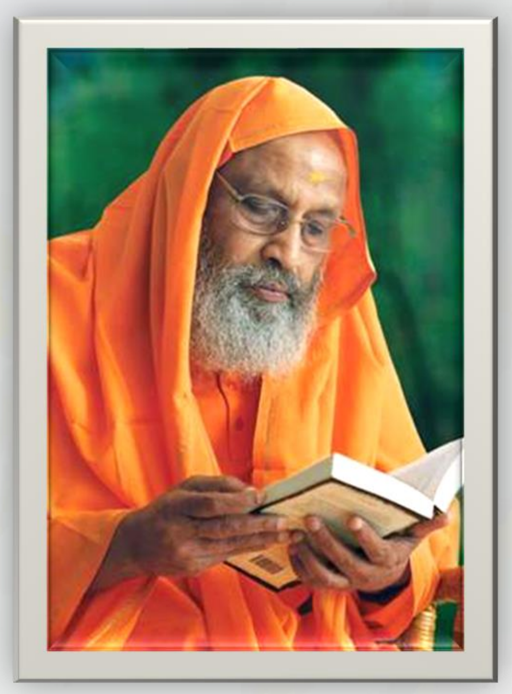
Date:

Place: **(Rajat Tripathi)**

स्वामी दयानंद सरस्वती का शैक्षिक योगदान

"जो व्यक्ति सच्चाई का पालन करता है, धर्म के अनुसार कार्य करता है, और दूसरों को प्रसन्न करने का प्रयास करता है, वही श्रेष्ठ और बुद्धिमान कहलाता है।"

- स्वामी दयानंद सरस्वती



मूल्य: ₹ 50

9 789356 924420